जैन साहित्य एवं मंदिर उपकरण

हमारे यहाँ सभी प्रकार का दिगंबर जैन एवं भारत के सभी प्रमुख धार्मिक संस्थानों का सत साहित्य एवं मदिर में उपयोग हेतु उपकरण और प्रभावना में बाटने योग्य सामग्री सीमित मूल्य पर उपलब्ध है !

शुध्द चांदी के उपकरण आर्डर पर निर्मित किये जातें है!

(पांडुशिला, सिंघासन ,छत्र ,चंवर प्रातिहार्य , जापमाला , मंगल कलश,पूजा बर्तन चंदोवा,तोरण,झारी)

नोट :- हमारे यहाँ घरो मे उपयोग हेतु , साधुओं के उपयोग हेतु, अनुष्ठानो मे उपयोग हेतु शुध्द देशी घी भी आर्डर पर उपलब्ध कराया जाता है !

Contact:-
Sourabh Sagar Indore
9993602663
7722983010
sourabhjn1989@gmail.com

जय जिनेन्द्र

जैन

गाय का शुद्ध देशी घी

शुद्धता पूर्वक बनाया गया देशी घी

साधु व्रती एवं धार्मिक अनुष्ठानो को ध्यान में रख कर बनाया गया शुद्ध देशी घी

घी ऐसा के दिल जीत जाये !

अब 1kg की पैकिंग में भी उपलब्ध

संपर्क सूत्र

Contact For Order

Sourabh Sagar Indore

Call & Whatsapp:

9993602663,7722983010

All India Home Delivery

सुख की राह

बेहतर जीवन जीने के लिए सामान्य सूझ बूझ पर आधारित मार्गदर्शिका

®

सेवा ______________________

द्वारा ______________________

इस पुस्तक का प्रयोग कैसे करें ?

आप अवश्य ही अपने मित्रों तथा जानकारों की सहायता करना चाहते होंगे।

किसी ऐसे व्यक्ति को चुन लो जिसके कार्य आपके अपने जीवन को प्रभावित करते हों, चाहे उसका प्रभाव कितना भी कम क्यों न हो।

उस व्यक्ति का नाम इस पुस्तक के मुख्य पृष्ठ की पहली लाईन पर लिख दो।

मुख्य पृष्ठ की दूसरी लाईन पर अपना नाम लिख दो या अपनी मोहर लगा दो।

यह पुस्तक उस व्यक्ति को भेंट कर दो।

उस व्यक्ति से कहो कि वह इस पुस्तक को पढ़े। आपको पता चलेगा कि उसे भी दूसरों द्वारा बुरे व्यवहार की संभावना से खतरा है।

उसे इस पुस्तक की कुछ और प्रतियां दे दो, परन्तु उन पर अपना नाम न लिखो। उसे कहो कि वह उन प्रतियों पर अपना नाम लिख कर अपने सम्पर्क में आने वाले मित्रों तथा साथियों को भेंट कर दे।

निरन्तर ऐसा करते रहने से आप अपनी तथा दूसरों की जीवन जीने की क्षमता में बहुत वृद्धि कर दोगे।

यह एक ऐसी राह है जो आपको और दूसरों को अधिक सुरक्षित तथा आनन्दमय जीवन की ओर ले जाएगी।

मैंने यह पुस्तक आपको क्यों भेंट की ?

आपका जीवन बना रहे यह मेरे लिए महत्वपूर्ण है।

सुख[1]

सच्ची खुशी तथा सच्चा सुख बहुत कीमती हैं।

यदि व्यक्ति जीवित ही नहीं है, तो उसे खुशी तथा सुख प्राप्त नहीं हो सकते।

एक अराजकतापूर्ण[2], बेईमान तथा दुराचारी[3] समाज में जीवित रहने का प्रयास करना कठिन है।

हर व्यक्ति या समुदाय चाहता है कि उसे जीवन में जितना हो सके उतना आनन्द प्राप्त हो तथा दुःखों से मुक्ति मिले।

आस पास के लोगों के बुरे कार्य आपके अपने जीवन को खतरे में डाल सकते हैं।

दूसरों की बेईमानी तथा दुराचार आपके अपने सुख को शोक तथा दुःखान्त में बदल सकते हैं।

मुझे विश्वास है आप इस प्रकार की घटनाओं को जानते हो जहां वास्तव में ऐसा हुआ था। इस प्रकार के बुरे काम व्यक्ति के जीवन में रूकावटें डालते हैं और उसके सुख को कम करते हैं।

आप दूसरों की दृष्टि में विशेष स्थान रखते हो। आप की बात को

---

1. **सुख** : ऐसी अवस्था जिसमें अच्छा महसूस किया जाता है, सन्तोष, आनन्द-मंगल, हर्ष और उल्लास से पूर्ण, ऐसा जीवन जिसमें कोई मुसीबत न हो।

2. **अराजकतापूर्ण** : ऐसी स्थिति जहां बहुत ज्यादा अव्यवस्था फैली हुई हो।

3. **दुराचारी** : जो अच्छे आचार के अन्तर्गत न आता हो, भले काम न करना, जिसमें उचित व्यवहार की कोई मात्रा न हो, अनैतिक।

ध्यान से सुना जाता है। आप दूसरों पर प्रभाव डाल सकते हो।

अपने जानकारों का सुख या दुःख आपके लिए महत्त्व रखता है।

ज्यादा कष्ट उठाए बिना, आप इस पुस्तक के प्रयोग द्वारा जीवन जीने के लिए तथा इसे अधिक सुखी बनाने के लिए दूसरों के सहायक बन सकते हो।

चाहे आप दूसरों के सुख की गारंटी तो नहीं दे सकते परन्तु उनके जीवित रहने तथा सुखी होने की सम्भावनाओं को बढ़ाया जा सकता है। उनके सुख की वृद्धि आपके अपने जीवन को अधिक सुखमय बना देगी।

ऐसी राह दिखाना आप के हाथ में है जो जीवन में सुखों को बढ़ा दे तथा खतरों को कम कर दे।

1 अपना ध्यान रखो।

1–1. बीमार होने पर अपना उपचार करवाओ। बीमारी चाहे छूत से फैलने वाली ही क्यों न हो, रोगी अक्सर न तो अपने आप को दूसरों से अलग रखते हैं, और न ही उचित इलाज करवाते हैं। आप आसानी से देख सकते हो, कि इससे आप के लिए खतरा पैदा हो जाता है। इस बात पर ज़ोर डालो कि जब कोई बीमार हो तो वह उचित सावधानियों का प्रयोग करे और अपना भली प्रकार इलाज करवाए।

1–2. अपना शरीर साफ सुथरा रखो। जो लोग नियमपूर्वक स्नान नहीं करते या हाथों को साफ नहीं रखते, वे जीवाणुओं को फैला सकते हैं। वे आपको खतरे में डालते हैं। आपका अधिकार है कि आप इस पर ज़ोर दो कि लोग नियमपूर्वक स्नान करें तथा हाथ साफ रखें। काम करने से तथा खेलकूद के दौरान गंदा होने से बचा नहीं जा सकता। उन्हें कहो कि बाद में वे अपने आप को साफ करें।

1–3. अपने दान्तों को सुरक्षित रखो। ऐसा माना जाता है कि यदि मनुष्य हर खाने के बाद अपने दांत ब्रुश से साफ करता है, तो उसके दांत खराब होने से बचे रहते हैं। ऐसा करते रहने से, या हर भोजन के बाद च्युइंग गम (Chewing Gum)[4] के प्रयोग से लोग मुंह की बीमारियों तथा सांस की दुर्गन्ध से बहुत हद तक बचे रहते हैं। दूसरों को सुझाव दो कि वे अपने दान्तों को सुरक्षित रखें।

1–4. उचित आहार लो। जो लोग उचित आहार नहीं लेते, वे न तो आपके लिए कुछ कर सकते हैं और न ही अपने लिए। ऐसे लोगों में शारीरिक उर्जा कम होने की सम्भावना होती है। कभी–कभी उनका स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है। वे आसानी से बीमार पड़ जाते हैं। उचित आहार का अर्थ कोई विशेष प्रकार का भोजन करने से नहीं है परन्तु

---

4. पश्चिमी देशों में कई लोग खाना खाने के बाद च्युइंग गम (Chewing Gum) का प्रयोग करते हैं। भारत में खाना खाने के बाद दांत साफ करने के लिए बहुत से लोग मुंह में पानी डालकर कुल्ला करते हैं।

इसका अर्थ यह जरूर है कि मनुष्य नियमपूर्वक पौष्टिक आहार का सेवन करे।

1.5 आराम भी करो। मनुष्य को जीवन में कई बार नींद त्याग कर काम करना पड़ सकता है। परन्तु यदि मनुष्य साधारणतया भली प्रकार आराम नहीं करता, तो वह दूसरों के लिए बोझ बन सकता है। थके हुए मनुष्य सचेत नहीं होते। वे गलती कर सकते हैं। वे दुर्घटनाग्रस्त हो जाते हैं। जब कभी आपको उनकी जरूरत पड़ती है, वे अपने काम का सारा बोझ दूसरों पर डाल सकते हैं। वे दूसरों को खतरे में डाल देते हैं। जो लोग भली प्रकार आराम नहीं करते उन्हें जोर देकर कहो कि वे ऐसा करें।

2 संयमी[5] बनो।

2-1. हानिकारक नशीली दवाइयों का प्रयोग मत करो। नशीली दवाइयों का प्रयोग करने वालों को कई बार अपनी आंखों के सामने स्थित वास्तविक दुनिया भी दिखाई नहीं देती। वे वहां उपस्थित होते हुए भी वास्तव में वे वहां पर नहीं होते। राजमार्ग पर, साधारण मेलजोल के दौरान, घर के अन्दर वे आपके लिए खतरनाक सिद्ध हो सकते हैं। लोग इस गलत धारणा का शिकार होते हैं कि नशीली दवाइयों की सहायता से वे ''अच्छा महसूस करते हैं'' या वे ''बेहतर कार्य करते हैं'' या वे ''केवल खुश हो सकते हैं''। यह मात्र एक भ्रम है। देर सवेर नशीली दवाइयां उनके शरीर को नष्ट कर देंगी। लोगों को नशीली दवाइयां लेने से निरुत्साहित करो। जब वे इनका प्रयोग कर रहे हों, तो उन्हें प्रोत्साहित करो कि वे इनसे मुक्त होने के लिए सहायता लें।

2-2. अधिक शराब मत पीओ। शराब पीने वाले लोग सचेत नहीं होते। शराब के कारण लोगों में प्रतिक्रिया करने की क्षमता कम हो जाती है चाहे उन्हें यह प्रतीत होता हो कि शराब के कारण वे अधिक सचेत हैं। शराब औषधि के रूप में कुछ महत्व रखती है, परन्तु इस बात पर प्रायः जरूरत से बहुत ज्यादा जोर दिया जाता है। अगर किसी ने शराब पी रखी है, तो उसे अपनी कार या हवाई जहाज चलाने की इजाज़त मत दो। यह कई तरीकों से जान लेवा बन सकती है। थोड़ी शराब का भी गहरा प्रभाव होता है, इसके बहुत-ज्यादा सेवन से दुःख या मृत्यु को बुलावा मत दो। लोगों को अधिक शराब पीने से रोको।

ऊपर लिखे नियमों पर चलते रहने से आप शारीरिक तौर पर अधिक आनन्द प्राप्त कर सकते हो।

---

5. संयमी : सीमाओं से बाहर न जाना; किसी कार्य को ज़रुरत से ज्यादा न करना; अपनी लालसाओं को नियंत्रण में रखना।

3.अपने जीवनसाथी के प्रति वफ़ादार रहो।

शारीरिक सम्बंध एक ऐसा साधन हैं जिसके द्वारा एक जाति बच्चों एवं परिवार के माध्यम से भविष्य में अपने आपको बनाए रखती है । शारीरिक सम्बंधों से काफी आनन्द एवं सुख की प्राप्ति हो सकती है। प्रकृति की यही इच्छा थी ताकि वंश आगे चलते रहें परन्तु इसके कुप्रयोग या दुर्-उपयोग से भारी दण्ड भुगतने पड़ते हैं, यह भी शायद प्रकृति की इच्छा अनुसार ही है।

3.1 जीवनसाथी के प्रति वफादार रहो। जीवन साथी के प्रति बेवफाई से मनुष्य के जीवन को भारी ठेस पहुंच सकती है। बेवफाई से पैदा होने वाली क्रोधाग्नि के परिणामस्वरूप घटनाओं से इतिहास तथा अखबार भरे पड़े हैं। ''दोषी होने'' की भावना बहुत ज्यादा बुरी नहीं होती। ईर्ष्या और बदले की भावनाएं ज्यादा भयानक होती हैं। कौन जानता है ये कब भड़क उठें। ''सभ्य होना'' ''बंधन रहित होना'' और ''समझदारी'' के विषय में बातें करना तो बहुत आसान है, परन्तु ऐसी बातें बिगड़े जीवन को संवार नहीं सकतीं। ''दोषी होने की भावना'' इतनी भयानक नहीं होती जितनी खाने में मिली विष या छुरे का एक वार।

इसके अतिरिक्त सेहत का सवाल भी है। यदि आप इस बात पर ज़ोर नहीं देते कि आपका जीवनसाथी वफ़ादार हो तो आप स्वयं बीमारी का शिकार बन सकते हो। कुछ समय के लिए यह कहा जाता था कि यौन रोगों पर काबू पा लिया गया था। भले ही पहले यह ठीक हो, पर अब यह सच नहीं है। आजकल इन रोगों की कई लाइलाज किस्में विद्यमान हैं।

यौन सम्बंधों के विषय में दुर्-व्यवहार की समस्या कोई नई नहीं है। सातवीं शताब्दी में शक्तिशाली बुद्ध धर्म भारत से गायब हो गया। इस धर्म के अपने इतिहासकारों के अनुसार इसका कारण बौद्ध मठों में पाया

जाने वाला व्यभिचार था। आजकल भी यदि व्यापारिक या किसी दूसरे संगठन में व्यभिचार फैल जाता है, तो उस संगठन का अन्त होते देखा जा सकता है। बेवफाई की उपस्थिति में परिवारों के टुकड़ें टुकड़ें हो जाते हैं, चाहे इस विषय में उनकी बातचीत कितनी भी सभ्य क्यों न हो।

एक पल की लालसा सारे जीवन को दुःखमय बना सकती है। अपने आस पास के लोगों को इस का महत्व ज़ोर देकर समझाओ और अपने स्वास्थ्य एवं आनन्द की रक्षा करो।

शारीरिक सम्बंध सुख एवं आनन्द की राह पर एक ठोस कदम है। इसमें कोई दोष नहीं है, यदि वफादारी और शिष्टाचार के साथ भाग लिया जाता है।

4 बच्चों से प्यार करो तथा उनके सहायक बनो।

आज के बच्चे ही कल की सभ्यता बनेंगे। बच्चों को आज के संसार में प्रवेश करवाना कुछ-कुछ शेर के पिंजरे में फैंकने जैसा है। बच्चे अपने वातावरण को संभाल नहीं सकते और न ही उनके पास ऐसा करने के लिए उचित साधन होते हैं। इसलिए उन्हें सहायता तथा प्यार की जरूरत है।

चर्चा करने के लिए यह एक नाजुक समस्या है। बच्चों के पालन-पोषण में क्या किया जाए और क्या न किया जाए, इस विषय में लगभग हर माता-पिता के अपने-अपने सिद्धांत होते हैं।

फिर भी यदि मनुष्य इसे गलत ढंग से करता है, तो इसका परिणाम बहुत दुःखदायी हो सकता है, और यहां तक कि मनुष्य अपने आखरी समय के लिए मुसीबत खड़ी कर सकता है। कुछ लोग अपने बच्चों को उसी ढंग से पालना चाहते हैं जिस ढंग से उनका अपना पालन-पोषण हुआ था। दूसरे इससे बिल्कुल उल्ट चलने का प्रयास करते हैं। कुछ इस सिद्धांत में विश्वास करते हैं कि बच्चों को अपने आप विकसित होने दिया जाए। इन तरीकों में से कोई भी निश्चित रूप से सफल नहीं है। यहां लिखा गया आखरी तरीका भौतिकवाद[6] के इस विचार पर आधारित है कि बच्चों का विकास उसी प्रकार होता है जिस प्रकार विकासवाद[7] के सिद्धांत अनुसार मनुष्य जाति का विकास हुआ था। इसके अनुसार जैसे जैसे बच्चे की आयु में वृद्धि होती है, एक रहस्यमयी ढंग से उसकी ''नसें'' परिपक्व होती जाती हैं जिसका

---

6. **भौतिकवाद** : एक ऐसी विचारधारा या सिद्धान्त जिसके अनुसार केवल भौतिक तत्वों या पदार्थों का ही अस्तित्व है।

7. **विकासवाद** : एक प्राचीन सिद्धान्त, जिसमें यह माना जाता है कि सृष्टि के आरम्भ में एक ही मूल तत्व था जिसमें से सभी वनस्पतियां, वृक्ष, जीवजन्तु, मनुष्य निकले, विकसित हुए और बढ़े हैं। इनके निर्माण और विकास में केवल माहौल की भूमिका होती है।

परिणाम एक नैतिक एवं सभ्य व्यक्ति होगा। यदि अपराधियों की बड़ी संख्या पर नज़र डाली जाए, जिनकी ''नसें'' किसी कारण परिपक्व नहीं हूई, तो इस सिद्धान्त को गलत सिद्ध किया जा सकता है। बच्चों के पालन–पोषण का यह एक आलसी ढंग है, जिसे कुछ लोकप्रियता मिली है। ऐसा तरीका न तो आपकी सभ्यता के भविष्य के लिए कुछ कर सकता है और न ही आपकी आखरी उमर के लिए।

कुछ हद तक बच्चा एक कोरी स्लेट जैसा होता है। यदि आप इस पर गलत बातें लिखते हो, तो यह गलत बातें बताएगी। भले ही स्लेट ऐसा नहीं करती, किन्तु बच्चा ''लिखी हुई बात'' को वास्तविक रूप देना आरम्भ कर सकता है। बच्चे में ''लिखी हुई बात'' को लिखने की प्रवृति होती है। जबकि अधिकांश बच्चे भद्र व्यवहार की क्षमता रखते हैं, परन्तु बहुत कम बच्चे जन्म से ही पागल होते हैं, और कुछ जन्म से ही नशीली दवाइयों[8] के आदी होते हैं, जिसके कारण यह समस्या और भी जटिल बन जाती है। परन्तु ऐसे बच्चों की संख्या बहुत ही कम होती है।

इसका नतीजा ठीक नहीं निकलता, यदि अपनी बात मनवाने के लिए बच्चे को अत्याधिक खिलौने और चीज़ें देने का प्रयास किया जाता है या उसके साथ दम घुटने वाला प्यार किया जाता है और उसे दुनियां की वास्तविकता से दूर रखा जाता है। इन सब के परिणाम काफी बुरे हो सकते हैं।

मनुष्य को फैसला करना चाहिए कि वह बच्चे को क्या बनाने का प्रयास कर रहा है। बहुत से तथ्य इस फैसले में फेर बदल कर सकते हैं : क) अपने जन्मजात गुणों तथा क्षमताओं के कारण बच्चा मौलिक रूप से क्या बन सकता है; ख) बच्चा स्वयं वास्तव में क्या बनना चाहता है; ग) व्यक्ति बच्चे को क्या बनाना चाहता है; घ) कौन से साधन उपलब्ध हैं। इन तथ्यों का कुल मिला कर कुछ भी परिणाम निकले, परन्तु याद रखो कि जब तक बच्चा अन्ततः आत्मनिर्भर तथा पूरी तरह

8. नशीली दवाईयां : यदि गर्भवती माता नशीली दवाईयों का प्रयोग करती है तो उसका बच्चा जन्म से ही नशीली दवाईयों का आदी हो सकता है।

से सदाचारी नहीं बन जाता, तब तक वह जीवन बनाए रखने में सफल नहीं होगा, और इसके परिणामस्वरूप बच्चा अपने लिए तथा दूसरों के लिए सम्भवतः एक बोझ बन जाएगा।

बच्चे के लिए आप के मन में कितना भी प्यार क्यों न हो, पर याद रखो कि यदि बच्चे को जीवन जीने के सही रास्ते पर चलाया नहीं जाता, तो बड़ा होकर बच्चा जीवन जीने में सफल नहीं हो सकेगा। यदि बच्चा गलत रास्ते पर चल पड़ता है तो यह कोई अचम्भा नहीं है, क्योंकि वर्तमान समाज की बनावट ही ऐसी है जो बच्चे को असफल बनाती है।

यदि इस पुस्तक में लिखे नीतिवचन[9] बच्चे को समझा दिए जाते हैं, और उन पर चलने के लिए बच्चे की सहमति प्राप्त कर ली जाती है, तो यह अत्याधिक लाभप्रद होगा।

बच्चे का मित्र बनने का प्रयास एक ऐसी नीति है जो निश्चित रूप से कारगर सिद्ध होगी। यह बिल्कुल सच है कि बच्चे को मित्रों की जरूरत है। यह पता करो कि बच्चे की वास्तविक समस्या क्या है, और इसके लिए बच्चे ने जो हल स्वयं ढूंढे हैं उन्हें रौंदे बिना, इन्हें हल करने में बच्चे की सहायता करो। बच्चों का अवलोकन करो चाहे वे दूध पीते बच्चे ही क्यों न हों। बच्चे जो कुछ अपने जीवन के बारे में बताते हैं उसे ध्यान से सुनो। बच्चों द्वारा दी गई सहायता को स्वीकार करो। यदि आप बच्चों द्वारा दी गई सहायता को स्वीकारते नहीं, तो बच्चे अपने आप को आपके अहसानों के नीचे दबा महसूस करते हैं, जो एक ऐसी भावना है जिसे वे हर हालत में दबाना चाहते हैं।

यह बच्चे की बहुत बड़ी सहायता होगी यदि सुख की इस राह को समझाने तथा इसके लिए बच्चे की सहमति प्राप्त करने में आप बच्चे के सहायक बनते हो, और इस पर चलने के लिए उसे प्रेरित करते हो। ऐसा करने से बच्चे के जीवन पर, और आपके अपने जीवन पर अति महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ेगा।

---

९. नीतिवचन : (नीतिनियम) व्यवहार या आचरण के लिए बनाए गए कथन, या नियम, या सिद्धान्त।

यह सच है कि जिस बच्चे को प्यार नहीं मिलता, वह अपने जीवन को ठीक ढंग से नहीं चला पाता। अधिकांश बच्चों में प्यार को लौटाने की भरपूर शक्ति होती है।

सुख की राह पर चलने के लिए जन्म से बालिग होने तक बच्चों को प्यार करना और उनकी सहायता करना ज़रूरी हैं।

5.माता-पिता का सम्मान करो और उनकी सहायता करो।

बच्चों के विचार में माता-पिता को समझना कभी-कभी कठिन होता है। पीढ़ियों के मध्य भिन्नता तो होती ही है, परन्तु सच पूछो तो यह कोई रूकावट नहीं बननी चाहिए। जब व्यक्ति में कमज़ोरी होती है, तो वह झूठ और बहानेबाज़ी का सहारा लेना चाहता है। यही वह चीज़ है जो दीवार खड़ी करती है।

बच्चे माता-पिता के साथ अपने मतभेदों को दूर कर सकते हैं। इससे पहले कि चिल्लाना शुरू किया जाए, शान्तिपूर्वक बातचीत द्वारा मामला सुलझाने का कम से कम प्रयास तो करना चाहिए। यदि बच्चा साफदिल और ईमानदार है, तो यह हो नहीं सकता कि उसके दिल की बात माता-पिता तक न पहुंचे। जब दोनों पक्ष एक - दूसरे को समझते हों और सहमत हो सकते हों, तो समझौता करना अक्सर सम्भव होता है। दूसरों के साथ मिल-जुलकर रहना हमेशा आसान नहीं होता, परन्तु मनुष्य को प्रयास करने चाहिएं।

इस तथ्य को नज़रन्दाज़ नहीं किया जा सकता कि माता-पिता की लगभग हमेशा यह प्रबल इच्छा होती है कि वे बच्चे के लिए अपनी समझ अनुसार अच्छे से अच्छा करें।

अपने पालन-पोषण के लिए बच्चे माता-पिता के ऋणि होते हैं बशर्ते कि उन्होंने ऐसा किया था। बेशक कुछ माता-पिता इतने ज्यादा आज़ादी पसन्द होते हैं कि वे अपने उपकारों के बदले में कुछ नहीं लेना

चाहते। फिर भी यह सच है कि अक्सर ऐसा समय आता है जब बारी नौजवान पीढ़ी की होती है कि वे माता-पिता की देखभाल करें।

इन सभी बातों के बावजूद व्यक्ति को याद रखना चाहिए कि उसके एक ही माता-पिता होते हैं। और इसलिए चाहे कुछ भी हो जाए व्यक्ति को उनकी सहायता और उनका सम्मान करना चाहिए।

सुख की राह पर चलने में यह भी शामिल है कि अपने माता-पिता या अपने पालन-पोषण करने वालों के साथ अच्छे सम्बंध रखे जाएं।

6. अच्छी मिसाल[10] कायम करो।

ऐसे बहुत से लोग हैं जिन पर मनुष्य प्रभाव डालता है। यह प्रभाव अच्छा भी हो सकता है या बुरा भी।

यदि मनुष्य अपने जीवन को इन सुझावों के अनुसार चलाता है, तो वह एक अच्छी मिसाल बन सकता है।

मनुष्य के आसपास के लोग अच्छे उदाहरण से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सकते, चाहे वे मुंह से कुछ भी कहते रहें।

यदि कोई आपको निरूत्साहित कर रहा है, तो इसका कारण यह है कि वह आपको सचमुच नुकसान पहुंचाना चाहता है या वह अपना उल्लू सीधा करने का प्रयास कर रहा है। मन ही मन में वे आप का आदर करते हैं।

अन्त में आप के अपने जीवन में सफलता के अवसर बढ़ जाएंगे, क्योंकि दूसरों पर अच्छा प्रभाव पड़ता है, और उन से आने वाला खतरा कम हो जाता है। इसके कुछ और लाभ भी हैं।

इस विषय की केवल चर्चा करके और जहां तक आप से बन पड़ता है अच्छी मिसाल कायम करके जो प्रभाव आप दूसरों पर डालते हो उसे कम मत समझो।

सुख की राह पर चलने के लिए जरूरी है कि आप दूसरों के लिए अच्छी मिसाल कायम करो।

---

10. अच्छी मिसाल (उदाहरण) : अनुकरण करने के योग्य, जिसका अनुसरण होना चाहिए, जिसके पीछे लगना चाहिए, एक आदर्श नमूना।

7. सच[11] को अपनाने का प्रयास करो।

मिथ्या तथ्यों को अपनाने से व्यक्ति मूर्खतापूर्ण गलतियां कर सकता है। ये सही तथ्यों को अपनाने में रूकावट भी डाल सकते हैं।

मनुष्य जीवन सम्बंधी समस्याओं को केवल तभी हल कर सकता है जब उसके पास सही तथ्य हों।

यदि मनुष्य के आसपास लोग झूठ बोलते हैं, तो वह गलतियां करता है, और उसकी जीवन जीने की क्षमता कम हो जाती है।

मिथ्या तथ्य मनुष्य को कई क्षेत्रों से मिल सकते हैं, जैसे विद्या, समाज, व्यवसाय आदि।

कई लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए अपनी बातों पर यकीन करवाना चाहते हैं।

सच वही है जो आपके लिए सच है।

किसी को कोई हक नहीं है कि वह आप के ऊपर तथ्यों को थोपे, या उन पर विश्वास करने के लिए आप पर हुक्म चलाए या दबाव डाले। यदि यह आपके अपने अनुसार सच नहीं है, तो यह सच नहीं है।

बुद्धि के प्रयोग से जीवन में अपना रास्ता स्वयं बनाओ। वही स्वीकार करो जो आपके अपने अनुसार सच है, बाकी को रद्‌द कर दो। जो मनुष्य झूठ से पैदा होने वाले उलझावों में जीने का प्रयास कर रहा है, उस से ज्यादा दुःखी और कोई नहीं है।

7–1. हानिकारक झूठ न बोलो। हानिकारक झूठ डर, कपट और ईर्ष्या से पैदा होते हैं। ऐसे झूठों के कारण लोग मरने मारने पर

---

11. सच : जो स्पष्ट नज़र आने वाले ज्ञान तथा तथ्यों से सहमत हो; ऐसे तर्कसंगत उत्तर जो सभी तथ्यों तथा सूचनाओं के आधार पर बनाएं गए हों; ऐसे निष्कर्ष जिनको प्रमाणों के आधार पर बनाया गया हो न कि किसी इच्छा, या अधिकारी विद्वान, या पूर्वधारणा के आधार पर; ऐसे तथ्य जिनसे बचा न जा सके, जिन्हें टाला न जा सके, चाहे इन्हें किसी भी ढंग से प्राप्त किया गया हो।

उतर आते हैं। ऐसे झूठ लोगों के जीवन को बर्बाद कर सकते हैं। ये ऐसा ताना बाना बुनते हैं जिस में झूठ बोलने वाला और उसका निशाना दोनों फंस सकते हैं। इसके परिणामस्वरूप परस्पर झगड़े तथा समाज में दंगे फैल सकते हैं। कई युद्ध हानिकारक झूठों के कारण आरम्भ हुए थे।

मनुष्य को सीखना चाहिए कि इन झूठों को कैसे पहचाना जाए ताकि इन्हें त्यागा जा सके।

7-2. झूठी गवाही मत दो। झूठी गवाही देने तथा झूठे ''तथ्यों'' की पुष्टि करने के लिए काफी कड़ी सजाएं दी जाती हैं। इसे ''कसमभंग'' कहा जाता है। इसके लिए कठोर दण्ड दिए गए हैं।

सुख की राह सच्च के मार्ग के साथ-साथ चलती है।

8. कत्ल[12] न करो।

प्राचीन काल से लेकर अब तक अधिकतर मानव जातियों ने कत्ल की मनाही की है और इसके लिए सख्त सज़ाएं भी दी हैं। कभी-कभी इसी विचार को बढ़ा कर इस प्रकार कहा गया है : ''जीव हत्या न करो''। कुछ समय पश्चात इसका अर्थ ''कत्ल न करो'' निकाला गया।

''जीव हत्या'' और कत्ल इन दोनों शब्दों में काफी अन्तर है। हर प्रकार की जीव हत्या की मनाही आत्मरक्षा को असम्भव बना देगी, ऐसे सांप को मारना गैर-कानूनी बन जाएगा, जो किसी बच्चे को डसने के लिए तैयार बैठा है, और एक जाति को वनस्पतियों के आहार पर गुज़ारा करना पड़ जाएगा। मुझे यकीन है आप ऐसे कई उदाहरणों से अवगत होंगे, जहां पर हर प्रकार की हत्या की मनाही कठिनाईयों को पैदा कर देगी।

कत्ल बिल्कुल एक अलग चीज़ है। इसकी परिभाषा है ''किसी मनुष्य द्वारा एक या एक से अधिक मनुष्यों की गैर-कानूनी हत्या, विशेषकर जब यह पहले से बनाई गई योजना के साथ की जाए।''

यह आसानी से समझ में आ सकता है कि घातक शस्त्रों के इस युग में कत्ल करना बहुत आसान हो गया है। ऐसे समाज में जीवन बिताना बहुत कठिन है, जहां व्यक्ति स्वयं, उसका परिवार, या उसके मित्र उन लोगों के रहमों कर्म पर हों, जो लापरवाही से दूसरों की जान लेते फिरते हैं।

यह ठीक ही है कि अपराधों की रोकथाम तथा सज़ा के विषय में कत्ल को सबसे ज्यादा महत्व दिया गया है।

बेवकूफ, दुष्ट तथा सिरफिरे लोग अपनी काल्पनिक या असली समस्याओं को कत्ल द्वारा हल करना चाहते हैं। ऐसे लोगों को बिना कारण हत्या करते भी देखा गया है।

---

12. कत्ल : किसी व्यक्ति द्वारा एक या एक से ज्यादा मनुष्यों की ग़ैरकानूनी हत्या, विशेषकर जब यह पहले से योजना बना कर की जाती है।

मनुष्य जाति के इस खतरे को सुलझाने के लिए जो भी कार्यक्रम प्रभावशाली सिद्ध हो, उसका पूरे ज़ोर से समर्थन करो। इस पर आपका अपना जीवन निर्भर कर सकता है।

आपके मित्रों का, आपके परिवार का या स्वयं आपका कत्ल किया जाना सुख की राह पर चलने में शामिल नहीं है।

9. कोई गैर-कानूनी कार्य मत करो।

गैर-कानूनी कार्य वे हैं, जिनकी सरकारी नियम या कानून मनाही करते हैं। इन कानूनों को शासक, न्यायाधीश तथा विधानसभाएं निर्मित करती हैं। साधारणतया इन्हें कानूनों के कोड में लिखा जाता है। एक सुसंस्कृत समाज में इन्हें प्रकाशित किया जाता है तथा इनके विषय में जनता को अवगत कराया जाता है। एक विवेकहीन समाज में, जहां अपराधों की प्रायः भरमार होती है, सभी कानूनों को समझने के लिए या तो वकील से सलाह लेनी पड़ती है या इनके विषय में विशेष प्रशिक्षण लेना पड़ता है। इस प्रकार का समाज कहता है कि कानून के विषय में अज्ञानता को कानून तोड़ने वाले की सफाई नहीं माना जा सकता।

जो भी हो, समाज के हर जवान या बुजुर्ग की यह जिम्मेवारी है कि वह पता करे कि किसी समाज विशेष में किन कार्यों को गैर-कानूनी समझा जाता है। इनके विषय में दूसरों से पूछा जा सकता है तथा पुस्तकालयों में जाकर इन के विषय में जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

''जा कर सो जाओ'' जैसे साधारण आदेश को न मानना ''गैर कानूनी कार्य'' नहीं है। गैर-कानूनी कार्य वह है जिसे करने पर सरकार या अदालतों द्वारा सज़ा दी जा सकती है। सरकार अपने प्रॉपेगैंडा[13] के साधनों द्वारा जीना दूभर कर सकती है, जुर्माना कर सकती है, और कैद भी कर सकती है।

जब कोई मनुष्य छोटा या बड़ा गैर-कानूनी कार्य करता है, तो वह अपने विरूद्ध सरकारी कारवाई को बुलावा देता है। इससे कोई फर्क नहीं

---

13. प्रॉपेगैंडा : ऐसे विचारों, तथ्यों या अफ़वाहों को फैलाना जिनसे अपने स्वार्थ की सिद्धी हो और दूसरे को हानि पहुंचे, अक्सर इनका सच्चाई से कोई सम्बंध नहीं होता; समाचार पत्रों, रेडियो तथा टैलीविजन द्वारा मिथ्या तथ्यों को फैलाना ताकि मुकद्दमे के दौरान उसे दोषी सिद्ध किया जा सके; मिथ्या

पड़ता कि मनुष्य पकड़ा जाता है या नहीं। जब मनुष्य गैर-कानूनी कार्य करता है, तो वह अपना बचाव पक्ष कमजोर कर बैठता है।

प्रायः ऐसे सभी सार्थक कार्य, जिन्हें व्यक्ति करना चाहता है, कानून की सीमा में पूरी तरह रहते हुए किए जा सकते हैं। गैर-कूननी तरीका समय नष्ट करने वाला खतरनाक छोटा रास्ता है।

गैर-कानूनी कार्यों से लाभ की कल्पना की जाती है, परन्तु सामान्यतः इनके परिणाम सार्थक नहीं होते।

राज्य तथा सरकार कुछ हद तक भावना-रहित मशीन जैसे होते हैं। इनका अस्तित्व तथा इनके कार्य कानून और कानूनों के कोड पर आधारित होते हैं। अपने साधनों की सहायता से ये गैर-कानूनी कार्यों का गला घोटने के लिए तैयार रहते हैं। इस प्रकार ये एक कठोर दुश्मन बन सकते हैं, गैर-कानूनी कार्यों के विषय में जिनका रवैया टस से मस नहीं होता। कानूनों के कोड के सामने कार्यों की अच्छाई और बुराई महत्व नहीं रखती। केवल कानून ही सब कुछ होता है।

जब आप देखें या महसूस करें की आसपास के लोग गैर-कानूनी कार्य कर रहे हैं तो हर सम्भव तरीके से उन्हें निरूत्साहित करने का प्रयास करो। आप भले ही इन कार्यों में शामिल न हो, फिर भी इनके कारण आपको नुकसान हो सकता है। एक अकांउटैंट (लेखापाल) हिसाब-किताब में घोटाला करता है, इससे पैदा होने वाली गड़बड़ के कारण फर्म फेल हो सकती है और आप नौकरी से हाथ धो सकते हो। इस प्रकार की घटनाएं मनुष्य के अपने जीवन पर बहुत बुरा प्रभाव डाल सकती हैं।

यदि आप किसी ऐसे वर्ग के सदस्य हो जिस पर कानून लागू होते हैं, तो आप उस कानून के सही प्रकाशन को प्रोत्साहित करो, ताकि उनके विषय में लोग जानकार हो सकें। किसी वर्ग के कानूनों को कम करने के लिए, उन्हें सुस्पष्ट एवं संहिताबद्ध करने के लिए यदि कोई कानूनी राजनैतिक प्रयास है, तो उसका समर्थन करो। कानून की दृष्टि में सभी मनुष्य बराबर हैं, इस सिद्धांत का दृढ़तापूर्वक पालन करो।

तथ्यों द्वारा किसी को बदनाम करने का प्रयास ताकि उसकी बातों को महत्व न दिया जाए। प्रॉपेगैंडिस्ट (Propagandandist) ऐसा व्यक्ति या वर्ग जो इस प्रकार का प्रॉपगैंडा करने में भाग लेता है।

राजा–महाराजाओं के ज़ुल्म के ज़माने में, यह सिद्धान्त मानवीय इतिहास की सर्वोच्च्च सामाजिक प्रगतियों में से एक था। इस सिद्धान्त को आंखों से ओझल नहीं होने देना चाहिए।

यह ध्यान में रखो कि बालकों तथा वयस्कों को अवगत कराया जाए कि कानूनी और गैर–कानूनी कार्य कौन से हैं। यदि और कुछ नहीं तो त्योरी चढ़ा कर ही ज़ाहिर करो कि आपको गैर–कानूनी कार्य पसंद नहीं है।

गैर–कानूनी कार्य करने वाले भले ही ''पकड़े न जाएं'', फिर भी वे राज्य की शक्ति एवं बल के सामने कमज़ोर पड़ जाते हैं।

पकड़े जाने का भय मन में रखकर आप सुख की राह पर नहीं चल सकते।

10. सबके लिए बनाई गई और सबके लिए काम करने वाली सरकार का समर्थन करो।

अनैतिक और दुष्ट लोग और उनके गुट सरकार की शक्ति को हथिया सकते हैं और अपने स्वार्थ के लिए इसका प्रयोग कर सकते हैं।

केवल स्वार्थी लोगों के लिए बनाई और चलाई गई सरकार समाज को अल्प आयु प्रदान करती है। यह देश के हर व्यक्ति के जीवन को खतरे में डाल देती हैं। यहां तक कि ऐसी सरकार के संचालक भी खतरे में पड़ जाते हैं। इस प्रकार की सरकारों के खात्मे की घटनाओं से इतिहास भरा पड़ा है।

यदि ऐसी सरकारों का विरोध किया जाता है तो ये और अधिक हिंसा पर उतारू हो जाती हैं।

जब इस प्रकार का कुशासन विदेशों में हो तो व्यक्ति चेतावनी के तौर पर अपनी आवाज़ बुलंद कर सकता है। ऐसी सरकार का बढ़-चढ़ कर समर्थन करने की ज़रूरत नहीं है। किसी कानून का उल्लंघन किए बिना केवल अपना सहयोग वापिस लेकर इस प्रकार की सरकार में अन्ततः सुधार लाना फिर भी सम्भव है। इस पुस्तक को लिखते समय भी संसार की कई सरकारें केवल इसलिए असफल हो रही हैं, क्योंकि उनकी जनता मात्र सहयोग न करके अपनी मूक असहमति प्रकट कर रही हैं। ऐसी सरकारों के लिए खतरा बना रहता है, और अचानक आया कोई भी बेमौसमी तूफान इन्हें मिट्टी में मिला सकता है।

दूसरी ओर जब एक सरकार किसी स्वार्थी गुट या सिर-फिरे तानाशाह के लिए काम करने की बजाए आम जनता की भलाई के लिए स्पष्टतया सख्त मेहनत कर रही हो, तो मनुष्य को ऐसी सरकार का ज़ोरदार समर्थन करना चाहिए।

'सरकार' नाम का एक विषय भी है। स्कूलों में मुख्य रूप से ''नागरिक शास्त्र'' पढ़ाया जाता है। यह केवल वर्तमान सरकार के ढांचे के बारे में बताता है। सरकार के वास्तविक विषय के अधीन कई शीर्षक आते हैं जैसे :- राजनैतिक अर्थशास्त्र, राजनैतिक दर्शन, राजनैतिक सत्ता आदि आदि। ''सरकार'' का समूचा विषय और सरकार कैसे चलाई जाती है, ये काफी सुनिश्चित और लगभग एक तकनीकी विज्ञान हो सकता है। अगर आप एक बेहतर सरकार के निर्माण में रूचि रखते हो, ऐसी सरकार जो दुःखों का कारण नहीं बनती, तो आपको सुझाव देना चाहिए कि यह विषय स्कूलों की प्रारम्भिक शिक्षा में पढ़ाया जाए। आप स्वयं इसके बारे में पढ़ सकते हो। यदि कठिन शब्दों के अर्थों का पता लगा लिया जाता है तो यह कोई मुश्किल विषय नहीं है।

आखिरकार लोग और उनके माननीय नेता ही अपने देश के लिए खून-पसीना बहाते हैं, सरकार न तो खून बहा सकती हैं, और न ही मुस्करा सकती है। सरकार तो लोगों के दिमाग का मात्र एक विचार है। जीता जागता तो मनुष्य स्वयं ही है, और वह हो आप।

तानाशाही ज़ुल्म के साए नीचे सुख की राह पर चलना बहुत मुश्किल है। देखा गया है कि सब लोगों के लिए बनाई गई और सबके लिए काम करने वाली सरकार इस राह को सुखद बनाती है। इस प्रकार की सरकार जब भी बने हमारे समर्थन की हकदार है।

11. नेकदिल इन्सान[14] को हानि न पहुंचाओ।

दुष्ट व्यक्ति इस बात पर ज़ोर देते हैं कि सभी मनुष्य दुष्ट हैं, इसके बावजूद हमारे आसपास कई नेक पुरूष और स्त्रियां है। सौभाग्य से आप इनमें से कुछ के साथ परिचित होंगे।

सच तो यह है कि समाज नेकदिल पुरूषों और स्त्रियों के सहारे ही चल रहा है। सार्वजनिक कर्मचारी माननीय नेता, निजी क्षेत्र के लोग, जो अपने अपने काम कर रहे हैं, इनमें से अधिकांश नेकदिल मनुष्य हैं। यदि वे ऐसे न होते तो वे काफी समय पहले से सेवा करना बन्द कर देते।

इस प्रकार के लोगों पर हमला करना आसान होता है। उनकी सद्‌भावना उन्हें अपने आप को बहुत ज्यादा सुरक्षित करने नहीं देती, फिर भी समाज के बहुत सारे मनुष्यों का जीवन इन्हीं लोगों पर निर्भर है।

उग्र अपराधी, दुष्प्रचार[15] करने वाले और सनसनी खेज़ खबरें फैलाने वाले हमारा ध्यान दिन प्रतिदिन की इस वास्तविकता से हटाने का प्रयास कर रहे हैं, कि समाज नेकदिल इन्सानों के बिना बिल्कुल नहीं चल सकता। जबकि वे हमारी सड़कों की रक्षा करते हैं, बच्चों को नसीहतें देते है, बीमारों की देखभाल करते है, आग बुझाते हैं, और धीमी आवाज़ में समझदारी की बातें कहते है, लोगों में इस तथ्य को अनदेखा करने की प्रवृति होती है कि नेकदिल इन्सानों के सहारे ही यह दुनिया चल रही है, और मानव इस पृथ्वी पर जीवित है।

---

14. नेकदिल इन्सान : भला मनुष्य, नेक दिल मनुष्य जो दूसरों की सहायता करने में लगे हैं।

15. दुष्प्रचार : दुष्प्रचार ऐसे विचार, तथ्य, या अफवाहें जो अपना उल्लू सीधा करने के लिए और दूसरों को हानि पहुंचाने के लिए फैलाए जाते हैं।

फिर भी ऐसे मनुष्यों पर हमला हो सकता है। इनकी सुरक्षा के लिए और इन्हें नुक्सान से बचाने के लिए आवाज़ बुलन्द की जानी चाहिए, क्योंकि आपका अपना, आपके परिवार का और आपके मित्रों का जीवन इन पर निर्भर है।

सुख की राह पर यात्रा और अधिक सरल बन जाती है, जब आप नेकदिल इन्सानों का समर्थन करते हो।

12. अपने वातावरण को सुरक्षित रखो और उसे सुधारो।

12.1 बन संवर कर रहो।

क्योंकि लोग अपने आप को निहारने में बहुत समय नहीं लगाते इसलिए कभी-कभी उन्हें यह सूझता ही नहीं कि वे दूसरों के दृश्य का अंश हैं और कुछ को यह अहसास ही नहीं होता कि लोग उन्हें रंगरूप के आधार पर परखते हैं।

कपड़े तो महंगे हो सकते हैं परन्तु साबुन और देखभाल के दूसरे साधनों को प्राप्त करना इतना कठिन नहीं है। सफाई के तरीकों का पता लगाना कभी-कभी मुश्किल होता है पर इन्हें नए सिरे से विकसित किया जा सकता है।

कुछ असभ्य या पतित समाजों में दूसरों की आंखों का रोड़ा बनना एक फैशन बन सकता है। वास्तव में यह आत्म सम्मान की कमी का एक लक्षण है।

व्यायाम और काम-काज के दौरान मनुष्य काफी गन्दा हो सकता है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि दोबारा स्वच्छ नहीं हुआ जा सकता। उदाहरण के तौर पर कुछ यूरोपियन और अंग्रेज़ काम करते हुए भी अपने रंगरूप को ठीक बना कर रखते हैं। मनुष्य देख सकता है कि कुछ बेहतर खिलाड़ी पसीने में भीगे होने पर भी देखने में अच्छे लगते है। मैले कुचैले लोगों के कारण बिगड़ा वातावरण मनुष्य के मनोबल पर सूक्षम रूप से बुरा प्रभाव डाल सकता है।

आप अपने आसपास के लोगों को प्रोत्साहित करो कि वे देखने में अच्छे लगें, इसकेलिए जब उनका पहरावा अच्छा हो तो आप इसकी प्रशंसा करो, और जब यह अच्छा न हो, तो आप इस विषय में उनकी सहायता करो। ऐसा करने से उनके आत्मसम्मान और मनोबल[16] में वृद्धि

---

16. मनोबल : किसी व्यक्ति या समुदाय का मानसिक एवं भावात्मक रवैया; अच्छा महसूस करना; किसी कार्य में जुटे रहने के लिए तत्पर रहना; एक सामूहिक लक्ष्य के बारे में सचेत होना।

हो सकती है।

12.2 अपने क्षेत्र की देखभाल करो।

जब लोग अपने सामान और क्षेत्र को बिगाड़ देते हैं, तो इसका कुप्रभाव आपके अपने क्षेत्र पर पड़ सकता है।

जब लोगों में अपनी चीज़ों और स्थानों की देखभाल करने की योग्यता नहीं होती, तो यह उनकी इस भावना का लक्षण होता है कि वास्तव में वे उस स्थान से कोई सम्बंध नहीं रखते, और वास्तव में वे अपनी चीज़ों के मालिक नहीं हैं। छोटी उमर में उन्हें ''दी गई'' चीज़ों के साथ कई प्रकार की चेतावनियां या शर्ते जोड़ दी गई थीं, या फिर उनके भाई-बहन तथा माता-पिता ''दी गई'' चीज़ें उनसे वापिस ले लेते थे। और सम्भवतः उन्होंने महसूस किया कि उन्हें कोई नहीं चाहता था।

ऐसे लोगों का सामान, कमरे, कार्यस्थल पुकार पुकार कर कह रहे हैं कि वास्तव में उनका कोई मालिक नहीं है। इससे बुरी बात यह है कि कभी कभी सम्पत्ति के विरूद्ध क्रोधोन्माद[17] देखा जा सकता है। सार्वजनिक सम्पत्ति की तोड़-फोड़ इसका एक लक्षण है। ऐसा घर या कार ''जिसका कोई स्वामी नहीं है'' जल्दी ही नष्ट हो जाता है।

कम आमदनी वाले वर्गो के लिए बनाए गए मकानों की हालत जल्दी ही खस्ता हो जाती है, जिसे देखकर इन के निर्माताओं का दिल टूट जाता है। गरीब की तो परिभाषा ही यही है कि उसके पास बहुत थोड़ा होता है या कुछ भी नहीं होता। कई प्रकार से सताए जाने के कारण वे यह भी सोचने लगते हैं कि अपने निवास स्थान से उनका कोई सम्बंध नहीं है।

अमीर हो या गरीब, जब लोग किसी भी कारणवश अपने सामान तथा स्थान की देखभाल नहीं करते, तो उनके कारण आसपास के लोगों के लिए मुसीबत खड़ी हो सकती है। मुझे विश्वास है कि आपको ऐसे उदाहरणों का पता होगा।

ऐसे लोगों से पूछो कि जीवन में सचमुच उनका अपना क्या है? और जहां वे रहते हैं क्या उस जगह से वास्तव में उनका कोई सम्बंध है? ऐसे प्रश्नों के आपको आश्चर्यजनक उत्तर मिलेंगे तथा ऐसे प्रश्न पूछने से उनकी काफी मात्रा में सहायता भी होगी। सामान और

---

17. **क्रोधोन्माद** : पागलपन की सीमा तक पहुंचने वाला क्रोध।

स्थान को व्यवस्थित करने की कला सिखाई भी जा सकती है। किसी के लिए यह एक नया विचार हो सकता है कि एक चीज़ को प्रयोग करने के बाद उसी जगह वापिस रख दिया जाए, जहां से वह ली गई थी, ताकि वह दोबारा मिल सके। कुछ लोगों का आधा समय चीज़ों को ढूंढने में लग जाता है। यदि व्यवस्थित होने के लिए थोड़ा सा समय खर्च कर दिया जाता है, तो कामों को तेज़ी से किया जा सकता है। जैसा कि कुछ लोग समझते हैं, यह समय की बरबादी नहीं है।

अपने सामान तथा क्षेत्र की सुरक्षा के लिए दूसरों द्वारा उनके अपने सामान तथा स्थान की देखभाल करवाओ।

12–3 भू–ग्रह[18] की देखभाल में योगदान दो।

यह विचार कि व्यक्ति भू-ग्रह में हिस्सा रखता है और यह कि व्यक्ति उसकी देखभाल में योगदान दे सकता है, तथा देना चाहिए, कुछ लोगों के लिए वास्तविकता से बहुत परे हो सकता है। परन्तु आजकल जो कुछ दुनिया के दूसरे कोने में घटित होता है, वह आपके घर में होने वाली घटनाओं को प्रभावित कर सकता है।

शुक्र ग्रह को हाल में भेजे गए खोजयानों से प्राप्त होने वाली सूचनाओं से पता चला है कि हमारे अपने ग्रह की दशा इस हद तक बिगड़ सकती है कि यह किसी सजीव वस्तु के रहने योग्य न रहे। सम्भव है ऐसा आप के अपने जीवन काल में घटित हो जाए।

जंगलों को बहुत बड़ी मात्रा में काट दो, बहुत सारी नदियों तथा सागरों को दूषित कर दो, वायुमंडल को बिगाड़ दो, तो हम सब खत्म हो जाएंगे। पृथ्वी की सतह का तापमान झुलसाने वाला बन सकता है, वर्षा का जल गंधक के तेज़ाब में बदल सकता है, सभी सजीव वस्तुओं की मृत्यु हो सकती है।

मनुष्य पूछ सकता है कि यदि यह सब सच भी हो, तो मैं इसके लिए क्या कर सकता हूँ? जब लोग भू-ग्रह को दूषित कर रहे हों, तो उनकी ओर मात्र घूर कर देखना भी भू-ग्रह के लिए कुछ करने में शामिल है। यहां तक कि यदि मनुष्य मात्र यह राय रखता है कि भू-ग्रह को नष्ट करना अच्छी बात नहीं है और अपनी इस राय को व्यक्त करता है, तो यह भी भू-ग्रह के लिए कुछ करने में शामिल है।

---

18. भू–ग्रह : पृथ्वी ग्रह

भू–ग्रह की देखभाल घर के आंगन से शुरू होती है। इसमें वे क्षेत्र भी शामिल हैं जिनमें से गुज़र कर मनुष्य अपने स्कूल या काम–काज पर पहुंचता है। इसमें वे स्थान भी शामिल हैं जहां मनुष्य अपनी छुट्टियां मनाता है या पिकनिक पर जाता है। खाली पड़ी जगह या जल भण्डार को दूषित करने वाला कूड़ा–कर्कट, सूखा घास या झाड़ियां जिन्हें आग लग सकती है, ये सब ऐसी चीज़ें हैं जिनकी वृध्दि पर रोक लगनी चाहिए, जिनके बारे में व्यक्ति अपने खाली समय में कुछ कर सकता है। हो सकता है पेड़ लगाना देखने में एक छोटी सी बात हो, परन्तु इसका अपना ही महत्त्व है।

कुछ देशों में बेरोज़गार तथा बड़ी आयु के लोग मात्र खाली बैठ कर अपने जीवन को व्यर्थ नहीं गंवाते। वे बाग–बगीचों तथा वनो–उपवनों की देखभाल करते हैं, सफाई में सहायक बनते हैं। भू–ग्रह की देखभाल के लिए साधनों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता। हम देख सकते हैं कि बीसवीं शताब्दी के चौथे दशक में अमरीका के बेकार अफ़सरों तथा युवकों की शक्ति का उपयोग करने के लिए जो सिविलीयन कन्ज़रवेशन कोर (Civilian Conservation Corps) बनाई गई थी, वह अपनी किस्म की केवल एक ही योजना तो नहीं थी, परन्तु मंदी[19] के उस ज़माने में वह उन थोड़ी सी योजनाओं में से एक थी, जिसने अपने ऊपर हुए खर्च के मुकाबले में कहीं ज्यादा धन की उत्पत्ति की। इस संगठन ने भू–ग्रह के अमरीकी हिस्से के लिए महत्वपूर्ण कार्य किए और इसके बहुत बड़े भाग में वन लगाए। हम देखते हैं कि इस संगठन का अब कोई अस्तित्व नहीं है। यदि और कुछ नहीं तो कम से कम मनुष्य अपनी राय तो दे सकता है कि इस प्रकार की योजनाएं लाभप्रद होती हैं और मनुष्य उन माननीय नेताओं और संस्थाओं का समर्थन कर सकता है जो वातावरण की बेहतरी के लिए कार्य कर रही हैं।

तकनीकी ज्ञान की कोई कमी नहीं है, परन्तु इस ज्ञान के लिए तथा ज्ञान को कार्यन्वित करने के लिए धन की जरूरत है। धन को जुटाया जा सकता है, यदि इस प्रकार की विवेकपूर्ण आर्थिक नीतियों को अपनाया जाता है, जो हर व्यक्ति का हाथ तंग नहीं करतीं। ऐसी आर्थिक नीतियां विद्यमान हैं।

---

19. मंदी : जब व्यापार में गिरावट और बेरोज़गारी हो।

भू–ग्रह की देखभाल में सहायक बनने के लिए लोग कई प्रकार के कार्य कर सकते हैं। ''हमें कुछ करना चाहिए'' इस विचार को धारण करके लोग इस कार्य को करना आरम्भ करते हैं। वे इस दिशा में आगे बढ़ते हैं और दूसरों को सुझाव देते है कि उन्हें ऐसा करना चाहिए।

मनुष्य भू–ग्रह को नष्ट करने की क्षमता तक पहुंच गया है। अब यह ज़रूरी हो गया है कि मनुष्य में भू–ग्रह को बचाने की योग्यता पैदा हो, और वह इसके लिए कदम उठाए। आखिरकार इसी पर तो हम सब खड़े हैं।

यदि लोग वातावरण की रक्षा और सुधार नहीं करते तो हो सकता है सुख की राह पर यात्रा के लिए कोई धरती ही न रहे।

13. चोरी मत करो।

जब मनुष्य चीज़ों के स्वामित्व को मान्यता नहीं देता तो उसकी अपनी चीज़ों तथा सम्पत्ति को खतरा पैदा हो जाता है।

यदि कोई मनुष्य किसी कारणवश ईमानदारी के साथ अपने लिए सम्पत्ति एकत्रित करने में असमर्थ है, तो वह एक झूठा दावा कर सकता है कि कोई भी किसी चीज़ का मालिक नहीं है परन्तु आप ज़रा उसके जूते तो चुरा कर देखो!

एक चोर वातावरण को रहस्यमयी बना देता है। यह चीज़ कहां चली गई? उस चीज़ का क्या बना? चोर के कारण पैदा होने वाली परेशानी चोरी की गई चीज़ों के मूल्य से कहीं ज्यादा होती है।

वे मनचाही चीज़ों के विज्ञापनों को देखते हैं, वे दुःखी हो जाते हैं कि उनके अन्दर इन चीज़ों को ईमानदारी से प्राप्त करने की योग्यता नहीं है या वे किसी मानसिक आवेग के प्रभावाधीन आ जाते हैं, इनके कारण चोरी करने वाले कल्पना करते हैं कि उन्हें कोई कीमती चीज़ कम कीमत पर मिल रही है। परन्तु सारी मुसीबत तो कीमत की है। चोर को जो असली कीमत चुकानी पड़ती है उस पर विश्वास करना कठिन है। इतिहास में बड़े-बड़े डाकुओं ने अपना जीवन घोर नरक जैसे छिपने के अड्डों में तथा जेलों में गुज़ार कर लूटे हुए माल की कीमत चुकाई, जिसमें ''सुखी जीवन'' के क्षण नाम मात्र ही थे। इस प्रकार की भयानक दुर्दशा कीमती से कीमती वस्तु का भी मूल्य नहीं हो सकती।

चोरी किए गए माल की कीमत बहुत कम हो जाती है। ऐसी चीज़ों को छिपा कर रखा जाता है। इनके कारण व्यक्ति की स्वतंत्रता को सदैव खतरा बना रहता है। साम्यवादी देशों में भी चोर को जेल भेजा जाता है।

चीज़ों की चोरी करना असल में इस बात को स्वीकार करना है कि व्यक्ति में इतनी योग्यता नहीं है कि वह इन्हें ईमानदारी से

प्राप्त कर सके। या यह कि व्यक्ति में थोड़ा सा पागलपन है। एक चोर से पूछो कि इनमें से कौन सा कारण है। कारण इन दोनों में से एक होगा।

चोरी का माल लेकर सुख की राह पर यात्रा नहीं की जा सकती।

14. विश्वास के योग्य बनो।

जब तक आप अपने आसपास के लोगों पर दृढ़तापूर्वक विश्वास नहीं कर सकते, तब तक स्वयं आप के लिए खतरा बना रहता है। यदि वे लोग, जिन पर आप भरोसा करते हैं, अपना वचन पूरा नहीं करते, तो आप के अपने जीवन में गड़बड़ पैदा हो सकती है, और हो सकता है आपका अपना जीवन जीना खतरे में पड़ जाए।

मानवीय रिश्तों की इमारत के लिए परस्पर विश्वास मज़बूत ईंट का काम करते हैं। इसके बिना पूरी की पूरी इमारत गिर जाती है।

विश्वास का पात्र बनना एक ऐसा गुण है, जिसका बहुत आदर किया जाता है। जब किसी के पास यह गुण होता है, तो उसे अत्यंत मूल्यवान माना जाता है। जब कोई इसे खो बैठता है, तो उसे घटिया समझा जाता है।

अपने आसपास के लोगों को प्रेरित करो कि वे अपने व्यवहार को विश्वास योग्य बनाएं, और इसके हकदार बनें।

14.1 अपना दिया हुआ वचन निभाओ।

जब कोई किसी को विश्वास दिलाता है, वायदा करता है, या कसम उठाता है तो उसे इस पर पूरा उतरना चाहिए। यदि वह कहता है कि वह अमुक कार्य कर देगा, तो उसे वह कार्य अवश्य करना चाहिए। यदि वह कहता है कि वह अमुक कार्य नहीं करेगा, तो उसे वह कार्य नहीं करना चाहिए।

दूसरों के प्रति मनुष्य का सम्मान बहुत हद तक इस बात पर निर्भर है कि वह अपना दीया हुआ वचन पूरा करता है या नहीं। उदाहरणार्थ माता-पिता भी इस बात को देख कर हैरान हो जाते हैं कि जब वे दिया गया वचन पूरा नहीं करते तो वे बच्चों की दृष्टि में कितने गिर जाते हैं।

जो लोग अपने वचन पूरे करते हैं उन्हें विश्वास के योग्य समझा जाता है, और उनका सम्मान किया जाता है। जो लोग ऐसा नहीं करते उन्हें बहुत घटिया समझा जाता है। जो अपना वचन तोड़ते हैं, उन्हें अक्सर दूसरा अवसर कभी नहीं मिलता।

जो व्यक्ति अपना दिया हुआ वचन पूरा नहीं करता, वह जल्दी ही अपने आप को कई प्रकार की ''गांरटियों'' तथा ''पांबदियों'' से घिरा तथा उलझा देखता है और यहां तक कि दूसरों के साथ उसके साधारण सम्बंध भी टूट सकते हैं। अपने आप को अपने संगी साथियों की संगति से निष्कासित करने का सबसे बढ़िया तरीका यह है कि व्यक्ति अपने दीए हुए वचन को पूरा न करे।

आप को चाहिए कि आप दूसरों को लापरवाही से वचन देने का मौका कभी न दें। और आप को इस बात पर बल देना चाहिए कि जब एक बार वचन दे दिया जाता है तो उसे निभाना ज़रूरी है। वचन भंग करने वालों के साथ संबंध रखने से आप के अपने जीवन में बहुत परेशानी हो सकती है। इस विषय में लापरवाही नहीं बरती जा सकती।

सुख की राह पर यात्रा अत्यंत सुगम हो जाती है जब विश्वसनीय व्यक्तियों का साथ हो।

15. अपने दायित्व[20] को निभाओ।

जीवन से गुजरते समय दूसरों के उपकारों को लिए बिना गुज़ारा नहीं है। सच तो यह है कि जब मनुष्य जन्म लेता है, तो उस के ऊपर कुछ एहसान होते हैं, और तत्पश्चात् इनमें वृद्धि होती जाती है। यह कोई नया विचार नहीं है कि व्यक्ति अपने जन्म तथा पालन-पोषण के लिए माता-पिता का ऋणि है। यह सेहरा माता-पिता को जाता है कि वे इसका थोड़ा सा अहसास कराने के अतिरिक्त इस पर ज़्यादा बल नहीं देते। परन्तु फिर भी यह एक एहसान है, जिसे बच्चा भी महसूस करता है। और जैसे-जैसे जीवन की यात्रा जारी रहती है, व्यक्ति पर किए गए अहसानों में वृद्धि होती जाती है - दूसरे लोगों के, मित्रों के, समाज के, और यहां तक कि संसार के।

किसी भी मनुष्य को अपने ऊपर किए गए एहसानों को चुकाने का अवसर न देना उसके साथ बहुत बड़ी ज़्यादती है। ‘‘बचपन की बगावत’’ का कारण बहुत हद तक वे लोग होते हैं जो एक शिशु या बालक, या युवक के ऐसे प्रयासों को स्वीकार नहीं करते जिनके द्वारा वे ‘‘एहसानों के बोझ को’’ हल्का करना चाहते हैं। भेंट करने के लिए ऐसे प्रयासों के अतिरिक्त उनके पास कुछ नहीं होता। एक शिशु की मुस्कानें, सहायता करने के लिए बालक के उल्टे सीधे तरीके, एक युवक द्वारा दी गई सलाह, बेटे या बेटी द्वारा योग्य बनने के प्रयत्न, ये सब अनदेखे रह जाते हैं या स्वीकार नहीं किए जाते। उनके ऐसे प्रयासों की रूपरेखा अक्सर योजनारहित और उद्देश्यहीन हो सकती है। ऐसे प्रयास जल्दी ही फीके पड़ जाते हैं। इस प्रकार के प्रयास जब उस विराट ऋण को उतारने में सफल नहीं होते, तो इन प्रयासों की जगह बालक कुछ प्रतिक्रियाएं करता है, या सफ़ाइयां देता है : ‘‘असल में कोई भी किसी का ऋणी नहीं है’’ ‘‘मैं तो पहले ही इनका हकदार था’’ ‘‘मैंने कौन

---

20. दायित्व : जिनके हम एहसानमन्द है, या जिन्होंने हम पर उपकार किए हैं, उनके प्रति हमारे फर्ज़ या जिम्मेदारियां।

सा कहा था कि मुझे पैदा करो'' ''मेरे माता-पिता या अभिभावक निकम्मे हैं'' ''जीवन जीना एक बेकार सी चीज़ है'' आदि आदि। इसके बावजूद एहसानों का बोझ बढ़ता जाता है।

यदि मनुष्य को समझ में नहीं आता कि एहसानों का बोझ कैसे चुकाया जाए, तो ऐसा बोझ मनुष्य को कुचल सकता है। इसके परिणामस्वरूप कई प्रकार की निजी या सामाजिक गड़बड़ पैदा हो सकती है। जब एहसानों के बोझ को हल्का नहीं किया जा सकता तो एहसान करने वाले अक्सर अनजाने में ऐसी प्रतिक्रियाओं का निशाना बन जाते हैं जिनकी उन्हें बिल्कुल भी उम्मीद नहीं होती।

यदि कोई मनुष्य एहसानों का बोझ न चुकाए जाने के कारण दुविधा में पड़ गया है, तो आप उस मनुष्य की सहायता कर सकते हो, जिसके लिए आप को चाहिए कि आप उस मनुष्य या औरत के साथ मिलकर ऐसे एहसानों की सूची बनाएं, जिनके बोझ को हल्का नहीं किया गया था, चाहे ये नैतिक, सामाजिक या रुपये पैसे से सम्बंधित हों, और आप को ऐसे सभी एहसानों को चुकाने का तरीका ढूंढना चाहिए, जिन्हें मनुष्य अब भी बोझ समझता है।

मनुष्य को बच्चे या व्यस्क के ऐसे प्रयासों को स्वीकार करना चाहिए जिनके द्वारा वे उन एहसानों को चुकाने का प्रयास कर रहे हैं, जिन्हें वे बोझ समझते हैं, और जिनका रुपये पैसे से कोई सम्बंध नहीं है। रुपये पैसे से सम्बंध रखने वाले एहसानों का बोझ हल्का करने के लिए मनुष्य को ऐसे समाधान ढूंढने में सहायता करनी चाहिए जिन पर दोनों पक्ष सहमत हों।

लोगों को निरूत्साहित करो कि वे अपने ऊपर इतने ज्यादा एहसान न लें जिन्हें चुकाना या जिनके बोझ को हल्का करना उनके लिए सम्भव नहीं है।

ऐसे एहसानों के बोझ तले रहकर सुख की राह पर चलना बहुत कठिन है जो दूसरों ने आप के प्रति नहीं चुकाए या जो आप ने दूसरों के प्रति नहीं चुकाए।

16. उद्यमी[21] बनो।

कामकाज सदा सुखद नहीं होता, किन्तु जो लोग उद्देश्यहीन, निकम्मा तथा रूचिरहित जीवन जी रहे हैं उनसे ज्यादा दुःखी बहुत कम लोग हैं। जब बच्चों के पास करने के लिए कुछ नहीं होता, तो वे उदास होकर मां से जा लिपटते हैं। चाहे वे कोई ''राहत'' या ''बेरोजगारी का भत्ता[22]'' क्यों न ले रहे हों, फिर भी लम्बे समय से सभी इस तथ्य से परिचित रहे हैं कि बेरोज़गार लोगों की मनोदशा निम्न स्तर की होती है। आंकड़े यह बताते हैं कि सेवा निवृत होने के बाद जब मनुष्य के पास प्राप्त करने के लिए कोई लक्ष्य नहीं रहता, तो निष्क्रियता के कारण उस का खात्मा हो जाता है।

ट्रैवल एजेंसी की बातों में आकर पर्यटक फुर्सत से आनन्द प्राप्त करना चाहते है, परन्तु जब उन के पास करने के लिए कुछ नहीं होता, तो वे टूर कंडक्टर का जीना दूभर कर देते हैं।

केवल किसी कार्य में व्यस्त हो जाने से दुःख कम हो सकता है।

किसी लक्ष्य की प्राप्ति से मनोबल की बुलंदियों पर पहुंचा जाता है। वस्तुतः यह प्रदर्शित किया जा सकता है कि कार्यपूर्ति ही मनोबल का आधार है।

जो व्यक्ति उद्यमी नहीं होते वे अपने कामकाज का बोझ आसपास के लोगों पर डाल देते हैं। वे दूसरों के लिए बोझ बन सकते हैं।

निष्क्रिय लोगों के साथ मिल जुल कर चलना बहुत कठिन होता है। वे मनुष्य को हताश करने के अतिरिक्त थोड़े बहुत खतरनाक भी हो सकते हैं।

इसका कामयाब हल यह है कि ऐसे लोगों को प्रेरित किया जाए कि वे अपने लिए कोई कार्य निश्चित करें तथा उस में व्यस्त हो जाएं।

---

21. उद्यमी : मेहनत करने वाला, जो अपनी मानसिक एवं शारीरिक शक्ति को अध्ययन तथा कामकाज में लगाता है, जो कार्यपूर्ति के लिए क्रियाशील है, निष्क्रियता तथा निठल्लेपन का उलट।

22. बेरोज़गारी का भत्ता : बेरोज़गार लोगों को राहत के रूप में दी गई धनराशि।

सर्वाधिक स्थाई लाभ उन कार्यों को करने से होगा जो वास्तव में किसी ठोस नतीजे की ओर ले जाते हों।

सुख की राह एक चौड़ी सड़क बन जाती है जब इसमें ठोस नतीजे की ओर ले जाने वाला उद्यम शामिल होता है।

17. कार्यकुशल[23] बनो।

जटिल तथा तेज़ गति वाली मशीनों तथा वाहनों के युग में मनुष्य का अपना, उसके परिवार का, तथा उसके मित्रों का भविष्य दूसरों की सामान्य कार्यकुशलता पर निर्भर करता है।

बाज़ार में, विज्ञानों के क्षेत्र में, मानविकी[24] में तथा सरकार में कार्यकुशलता की कमी थोड़े या बहुत लोगों के जीवन एवं भविष्य के लिए खतरा बन सकती है।

मुझे यकीन है कि आप इस प्रकार के कई उदाहरणों के बारे में सोच सकते हो।

मनुष्य की सदा यह प्रबल इच्छा रही है कि वह अपनी किस्मत को बस में करे। अंधविश्वास, अपने देवी-देवताओं की अराधना, धार्मिक नृत्य जिन्हें शिकार करने से पहले किया जाता है, ये सब होनी को बस में करने के साधन समझे जाते हैं, चाहे ये कितने भी असफल हों।

जब से मनुष्य ने बुद्धि का प्रयोग सीखा है, ज्ञान-विज्ञान के मूल्य को पहचाना है, और इसे प्रयोग करने में योग्यता प्राप्त की है, तभी से उसने अपने वातावरण पर अधिकार स्थापित किया है। हो सकता है कार्यकुशल बनने की क्षमता ही ईश्वर का सच्चा वरदान हो।

साधारण कार्यों में भी मनुष्य निपुणता और योग्यता की कदर करता है। एक नायक या खिलाड़ी में इन गुणों को पूजा जाता है।

सच्ची कार्यकुशलता की कसौटी उसका अन्तिम परिणाम होता है।

मनुष्य जितनी मात्रा में कार्यकुशल होता है, उतनी ही मात्रा में वह जीवन जीने में सफल होता है। जिस हद तक वह अपने कार्यों में अकुशल होता है, उसी हद तक वह नाश की ओर जाता है।

किसी भी सार्थक गतिविधि में कार्यकुशलता की प्राप्ति के लिए

---

23. **कार्यकुशल :** जिन कार्यों को व्यक्ति करता है उन्हें अच्छी तरह करने की योग्यता; कार्यक्षम; अपने कार्यों को करने में निपुण; जिन कार्यों की व्यक्ति से उम्मीद की जाती है उन्हें करने में पूरा उतरना।

24. **मानविकी :** साहित्य, इतिहास, दर्शन शास्त्र आदि अध्ययन के विषय, जो मनुष्यों के विचारों, आचार-व्यवहार और परस्पर सम्बंधों के बारे में हैं।

प्रोत्साहन दो। जब कभी यह देखने को मिलती है, इसकी सराहना करो तथा इनाम दो।

उच्च स्तरीय कार्यकुशलता की मांग करो। एक समाज की परख इसमें है कि क्या आप, आपका परिवार, और आप के मित्र इसमें सुरक्षित ढंग से जीवित रह सकते हैं या नहीं।

कार्यकुशलता के तत्वों में अवलोकन करना, अध्ययन करना और अभ्यास[25] करना शामिल हैं।

17.1 ध्यान से देखो।

देखो वही जो आपको दिखाई देता है न कि वह जिसे देखने के लिए कोई आपको बोलता है।

आपका अवलोकन वही है जो आपने स्वयं किया है। लोगों तथा जीवन को साफ नज़र से देखो, न कि पक्षपात की रंगीन ऐनक से, भय के पर्दे में से, या किसी दूसरे द्वारा निकाले गए अर्थों के आधार पर।

दूसरों के साथ वाद-विवाद करने की बजाए उनसे कहो कि वे ध्यान से देखें।

यदि किसी को ध्यान से देखने के लिए हल्का सा अनुरोध किया जाता है, तो झूठ के बड़े-बड़े गुबारे फुस हो सकते हैं, बड़े-बड़े आडंबरों का राज़ फ़ाश हो सकता है, अत्यंत जटिल गुत्थियों को सुलझाया जा सकता है, और अद्भुत विचार सूझ सकते हैं।

जब कभी कोई मनुष्य महसूस करता हो कि सब कुछ बहुत उलझ गया है और इसे सहन नहीं किया जा सकता, जब उस का दिमाग चक्कर पर चक्कर खा रहा हो, तो उस मनुष्य से कहो कि वह पीछे हटकर इसे ध्यान से देखे।

देखने के बाद जो कुछ उन्हें पता लगता है वह साधारणतया बहुत स्पष्ट होता है। वे अब आगे बढ़ कर इससे निपट सकते हैं। परन्तु यदि वे स्वयं नहीं देखते, स्वयं अवलोकन नहीं करते, तो हो सकता है उनके लिए इसमें कोई वास्तविकता न हो और दुनियां भर के आदेश, निर्देश तथा सज़ाएं उनकी उलझी गुत्थी को सुलझा नहीं सकतीं।

---

25. अभ्यास : किसी निपुणता (दक्षता) को प्राप्त करने के लिए उससे सम्बंधित क्रियाओं को बार-बार करना।

जबकि व्यक्ति संकेत कर सकता है कि किस दिशा में देखा जाए और सुझाव दे सकता है कि वे ज़रूर देखें, परन्तु इस बारे में निष्कर्ष निकालना उनके अपने हाथ में है।

एक बालक या वयस्क वही देखता है, जो उसे स्वयं दिखाई देता है और उसके लिए वही वास्तविकता होती है।

सच्ची कार्यकुशलता का आधार मनुष्य की अपनी अवलोकन करने की योग्यता होती है। इस तथ्य की वास्तविकता को मानकर ही मनुष्य दक्ष और निश्चयवान हो सकता है।

17.2 सीखने का प्रयास करो।

क्या कभी आपके साथ ऐसा हुआ है कि किसी के पास आपके बारे में झूठे तथ्य थे? क्या इससे आपको परेशानी हुई थी?

इससे आप अनुमान लगा सकते हो कि झूठे तथ्य किस प्रकार विनाशकारी बन सकते हैं। हो सकता है आपके पास भी किसी के बारे में झूठे तथ्य हों।

सच में से झूठ को पृथक करने से समझ-बूझ पैदा होती है।

आसपास बहुत सारे झूठे तथ्य पाए जाते हैं। दुष्ट इरादों वाले लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए झूठे तथ्यों को घड़ते हैं। कुछ झूठे तथ्यों की उपज तथ्यों की मात्र अज्ञानता से होती है। ऐसे तथ्य सच्चे तथ्यों को समझने में बाधा डाल सकते हैं।

मुख्य रूप से सीखने की प्रक्रिया इन सब से मिल कर बनी है : उपस्थित तथ्यों का निरीक्षण, झूठ से सच को तथा महत्वहीन तथ्यों से महत्वपूर्ण तथ्यों को पृथक करना, और तत्पश्चात् किसी ऐसे निष्कर्ष पर पहुंचना जिसे काम में लाया जा सके। यदि व्यक्ति ऐसा करता है, तो वह सफलतापूर्वक कार्यकुशल बनने की राह पर चल सकता है।

किसी भी ''सच'' की परख इस तथ्य पर निर्भर करती है कि क्या यह आप के लिए सच है? यदि व्यक्ति एक विषय के सम्बंधित तथ्यों को प्राप्त कर लेता है, उस विषय के जिन शब्दों को वह पूरी तरह नहीं समझता उन्हें स्पष्ट कर लेता है, विषय के क्षेत्र का निरीक्षण कर लेता है, और फिर भी यह विषय सच प्रतीत नहीं होता, तो जहां तक आपका संबंध है यह सच नहीं है। इसे रद्द कर दो। यदि आपको पसंद

है, तो पता करो कि उस विषय में आपके लिए सच क्या है? आखिरकार स्वयं आपने ही तो इसका प्रयोग करना है या नहीं, इन तथ्यों के साथ सोचना है या नहीं। यदि व्यक्ति ऐसे ''तथ्यों'' या ''सच्चाईयों'' को आंखें मूंद कर स्वीकार कर लेता है, ऐसे ''तथ्य'' या ''सच्चाईयां'' जो व्यक्ति को सच प्रतीत नहीं होते, और केवल इसलिए स्वीकार कर लेता है क्योंकि उसे कहा गया है कि वह ऐसा अवश्य करे, तो इसका अन्तिम परिणाम दुःखदाई होगा। यही वह रास्ता है जो अकुशलता के गंदे गड्ढे की ओर ले जाता है।

सीखने का एक ओर पहलू है जिसमें तथ्यों को केवल स्मृति में बिठाया जाता है, उदाहरण के तौर पर शब्द जोड़ या शब्दों के हिज्जे, गणित के पहाड़े या फार्मूले, किसी यंत्र के बटनों को दबाने का क्रम। परन्तु साधारण याद करने की क्रिया में भी व्यक्ति के लिए यह जानना ज़रूरी होता है कि याद की जाने वाली सामग्री किस काम आती है, और इसका प्रयोग कब और कैसे करना चाहिए।

सीखने की प्रक्रिया का अर्थ यह नहीं है कि केवल तथ्यों पर तथ्यों के ढेर लगा दिए जाएं। सीखने के फलस्वरूप नई सूझ-बूझ पैदा होती है और कार्यों को ज्यादा अच्छे ढंग से करने के तरीकों का पता चलता है।

जीवन में जिनको सफलता प्राप्त होती है वे अध्ययन करना और सीखना कभी नहीं छोड़ते। एक कार्यकुशल इन्जीनीयर नए तरीकों को सीखता रहता है। एक अच्छा खिलाड़ी अपने खेल को उन्नत करने के लिए निरन्तर प्रयास रत रहता है। एक विशेषज्ञ अपने व्यवसाय से सम्बंधित पुस्तकों की काफी मात्रा अपने निकट रखता है और उनसे सलाह लेता है।

अंडा फैंटने के लिए बनाया गया यंत्र, या कपड़े धोने की मशीन, या कार का नया मॉडल, इनका कुशलतापूर्वक प्रयोग करने से पहले यह आवश्यक है कि इनका अध्ययन किया जाए और इन्हें चलाना सीखा जाए। जब लोग ऐसा नहीं करते, तो रसोई में दुर्घटनाएं होती हैं, और राजमार्ग पर खून से लथ-पथ दुर्घटना ग्रस्त वाहनों को देखा जाता है।

जो मनुष्य सोचता है कि सीखने के लिए जीवन में अब कुछ भी

बाकी नहीं बचा, वह बहुत घमण्डी होता है। ऐसे मनुष्य की अज्ञानता खतरनाक सिद्ध हो सकती है, जो अपने पक्षपात के विचारों तथा झूठे तथ्यों को त्याग कर उनकी जगह ऐसी सच्चाइयों तथा तथ्यों को नहीं अपनाता जो उसके और दूसरों के जीवन में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

अध्ययन के ऐसे तरीके हैं जिनके द्वारा मनुष्य सचमुच सीख सकता है, और जो कुछ उसने सीखा है उसे प्रयोग में ला सकता है। संक्षेप में इसमें नीचे लिखी बातें शामिल हैं : ऐसे अध्यापक होने चाहिएं तथा ऐसी पाठ्य पुस्तकें होनी चाहिएं जो उस विषय के बारे जानकारी देते रहें, ऐसे शब्दों को स्पष्ट करना चाहिए जिन्हें मनुष्य पूर्ण रूप से नहीं समझता, उस विषय से संबंध रखने वाली दूसरी पुस्तकों से तथा विषय के क्षेत्र से सलाह लेनी चाहिए, ऐसे झूठे तथ्यों को अलग करना जो मनुष्य के पास पहले से हो सकते हैं, और जो आप के लिए अब सच है उसके आधार पर सच में से झूठ की छांटी करना। इसके परिणामस्वरूप मनुष्य निश्चयवान तथा कार्यकुशल बन जाता है। यह वास्तव में एक सार्थक और उज्जवल अनुभव हो सकता है। यह अनुभव वैसा ही होगा जैसा उस मनुष्य को होता है जो कांटेदार झड़ियों में से गुज़रने का कष्ट उठाते हुए एक खतरनाक पहाड़ की चोटी पर पहुंचता है और इस लम्बे चौड़े संसार के एक नए दृश्य को देखता है।

यदि एक सभ्यता अपना अस्तित्व बनाए रखना चाहती है, तो यह आवश्यक है कि वह अपने स्कूलों में अध्ययन करने की प्रवृत्ति तथा योग्यता को विकसित करे। स्कूल एक ऐसी जगह नहीं है जहां बच्चों को इसलिए भेजा जाता है ताकि वे दिन में मनुष्य को तंग न करें। बच्चों को इसलिए स्कूल भेजना बहुत मंहगा होगा। स्कूल कोई ऐसा स्थान नहीं है जहां तोते बनाए जाते हैं। यह एक ऐसा स्थान है जहां बच्चों को अध्ययन करना सीखना चाहिए, और जहां यह सिखाया जाता है कि वास्तविकता का सामना कैसे किया जाए और बच्चे भविष्य में संसार के साथ कुशलतापूर्वक कैसे निपटें, तथा इसकी बागडोर कैसे संभालें। यह एक ऐसा संसार होगा जहां आजकल के व्यस्क अपनी प्रौढ़ या वृद्ध अवस्था में होंगे।

अपराध प्रवृत्ति वाले मनुष्य ने सीखने का तरीका कभी नहीं सीखा। अदालतें उसे बार–बार यह समझाने का प्रयत्न करती हैं कि यदि उसने फिर अपराध किया तो उसे दोबारा जेल भेज दिया जाएगा। उनमें से बहुत सारे फिर वही अपराध करते हैं और वापिस जेल जाते हैं। सच पूछो तो अधिक से अधिक कानूनों के बनने का कारण अपराधी ही होते हैं। भले नागरिक तो कानून का पालन करते हैं। अपराधी की परिभाषा ही यह है कि वह ऐसा नहीं करता। अपराधी सीख नहीं सकते। सारे आदेश निर्देश तथा सज़ाएं, ऐसे व्यक्ति पर कारगर सिद्ध नहीं होंगी जो नहीं जानता कि सीखा कैसे जाए और जो सीख नहीं सकता।

एक अपराधी बन चुकी सरकार की विशेषता यह है कि उसके नेता सीख नहीं सकते, ऐसी स्थिति इतिहास में कभी–कभी पैदा हो जाती है। भले ही पिछला सारा रिकार्ड तथा सद्बुद्धि यह बताते हों कि अत्याचार का परिणाम बरबादी होगा, फिर भी इन्हें ठीक रास्ते पर लाने के लिए हिंसक क्रान्ति की ज़रूरत पड़ती है या किसी हिटलर से मुक्त होने के लिए दूसरे विश्वयुद्ध की। मानव जाति के लिए ये दुःखदाई घटनाएं थीं। ऐसे नेताओं ने सीखा नहीं। वे झूठे तथ्यों में मस्त रहे। उन्होंने सभी प्रमाणों तथा सच्चाईयों को मानने से इंकार कर दिया। उन्हें खत्म करना जरूरी था।

पागल सीख नहीं सकते। क्योंकि उन्हें छुपे हुए दुष्ट इरादे प्रेरित करते हैं या उन्हें इतना ज्यादा दबाया जा चुका है कि उनका विवेक काम करना बन्द कर देता है, उनके लिए तथ्य, सच्चाई और वास्तविकता दूर की बातें हैं। वे झूठे तथ्यों का जीता जागता रूप हैं। वे वास्तव में समझने सीखने का प्रयत्न नहीं करते, या उनमें ऐसा करने की क्षमता नहीं होती।

बहुत सारी व्यक्तिगत और सामाजिक समस्याओं के जन्म का कारण सीखने की अयोग्यता या सीखने से इंकार करना होता है।

आपके आसपास के कुछ लोगों के जीवन की रेल इसलिए पटरी से उत्तर जाती है क्योंकि वे अध्ययन करना तथा सीखना नहीं जानते। शायद आपको ऐसे कुछ उदाहरण पता होंगे।

यदि मनुष्य अपने आसपास के लोगों को अध्ययन करने या सीखने के लिए प्रेरित नहीं कर सकता, तो उसका अपना कार्य ज़्यादा कठिन तथा बोझ बन सकता है और उसकी जीवन जीने की अपनी क्षमता बहुत कम हो सकती है।

अध्ययन करने और सीखने में दूसरों की सहायता के लिए मनुष्य अगर और कुछ नहीं तो उन्हें ऐसे तथ्य उपलब्ध करवा सकता है, जो उनके पास होने चाहिएं। जो उन्होंने सीखा है उसके बारे में मात्र स्वीकृति व्यक्त करके भी मनुष्य सहायता कर सकता है। यदि कोई अपनी योग्यता में उन्नति करके दिखाता है, तो केवल उसकी सराहना करके भी सहायता की जा सकती है। यदि मनुष्य चाहता है, तो इससे भी ज्यादा किया जा सकता है। यदि मनुष्य दूसरों के लिए कुछ करना चाहता है, तो झगड़ा किए बिना झूठे तथ्यों को अलग करने में, जो शब्द समझ नहीं आए उन्हें ढूंढने में तथा स्पष्ट करने में, जिन कारणों से वे अध्ययन नहीं करते तथा सीखते नहीं उन्हें ढूंढने एवं हल करने में उनकी सहायता की जा सकती है।

क्योंकि जीवन बहुत हद तक आज़माइश और गलती का नाम है, इसलिए गलती करने वाले पर गुस्से से बरसने की बजाए यह पता लगाओ कि गलती हुई कैसे और पता लगाओ कि क्या दूसरा उस से कुछ सीख सकता है या नहीं।

हो सकता है कभी कभी आप इस बात से हैरान हो जाओ कि आपने किसी को मात्र अध्ययन करने और सीखने की राह पर डाल कर उसके जीवन की गुत्थी को सुलझा दिया है। मुझे विश्वास है कि आप इसके कई तरीके जानते होंगे। और मैं समझता हूं कि आप देखोगे विनम्रता पूर्वक किए गए प्रयासों को सर्वाधिक सफलला मिलती है। ऐसे लोगों के साथ दुनिया का व्यवहार पहले ही कठोर है, जो सीख नहीं सकते।

17.3 अभ्यास करो।

शिक्षा को फल तभी लगता है, जब इसे प्रयोग में लाया जाता है। बुद्धिमत्ता को ग्रहण करने का कारण स्वयं बुद्धिमत्ता हो सकती है। ऐसे

प्रयास में एक प्रकार की सुंदरता भी अनुभव की जा सकती है। परन्तु सच तो यह है कि मनुष्य को वास्तव में तब तक पता नहीं चलता कि वह बुद्धिमान है या नहीं जब तक मनुष्य प्रयोग द्वारा इसके परिणाम को देख नहीं लेता।

किसी भी गतिविधि, हुनर या व्यवसाय जैसे खाई खोदना, वकालत, इंजीनियरिंग, बावर्चीगिरी या किसी अन्य का कितना भी अच्छी तरह अध्ययन किया जाए, वह अन्त में इस कसौटी पर परखा जाता है कि क्या मनुष्य इसे कर सकता है? और इसे करने के लिए अभ्यास की ज़रूरत है।

फिल्मों में स्टंट करने वाले अगर पहले अभ्यास नहीं करते, तो वे चोटें खाते हैं। यही कुछ ग्रहणियों के साथ होता है।

''बचाव'' एक लोकप्रिय विषय नहीं है, क्योंकि साधारणतया इसके साथ ''सावधान रहो'' और ''धीरे चलो'' आदि निर्देश जुड़े रहते हैं। लोग महसूस कर सकते हैं कि उन पर बन्दिशें लगाई जा रही हैं। परन्तु इस विषय में एक और नीति भी है। यदि व्यक्ति ने वास्तव में अभ्यास किया है, तो उसकी निपुणता और दक्षता इस प्रकार की होगी कि उसे ''सावधान रहो'' या ''धीरे चलो'' का पालन करने की आवश्यकता ही नहीं होती। किसी हरकत करने वाली मशीन की सुरक्षित तेज़ रफ्तार केवल तभी सम्भव होती है जब इसका अभ्यास किया गया हो।

यह ज़रूरी है कि मनुष्य की निपुणता और दक्षता को उस युग की रफ्तार के स्तर पर लाया जाए, जिस में वह रहता है। और यह अभ्यास से ही किया जाता है।

मनुष्य अपने शरीर को, अपनी आंखों को, अपने हाथों पैरों को इस हद तक साध सकता है कि उनमें एक प्रकार की ''समझ'' पैदा हो जाती है। इसके पश्चात किसी स्टोव को जलाने या कार को पार्क करने के लिए मनुष्य को ''सोचने'' की ज़रूरत नहीं रहती। मनुष्य बिना किसी विशेष ध्यान के इन्हें **कर** लेता है। जब यह समझा जाता है कि किसी कार्य को करने में ''प्रतिभा'' की ज़रूरत है तो काफ़ी हद तक यह वास्तव में अभ्यास होता है।

जो मनुष्य किसी कार्य को करने में काम आने वाली प्रत्येक हरकत का पता नहीं करता, और फिर इन हरकतों का बार–बार इतना अभ्यास नहीं करता कि उन्हें बिना सोचे, तेज़ी से, और ठीक ढंग से किया जा सके, तो उसके साथ दुर्घटनाएं घटित हो सकती हैं।

आंकड़े इस तथ्य के साक्षी हैं कि न्यूनतम अभ्यास करने वाले सर्वाधिक दुर्घटनाओं के शिकार बनते हैं।

यही सिद्धान्त उन कलाओं एवं व्यवसाओं पर भी लागू होता है, जिनमे बुद्धि का मुख्य रूप से प्रयोग होता है। जिस वकील ने अदालती कार्यवाही का बार–बार, बार–बार अभ्यास नहीं किया, शायद उस ने मुकद्दमें के नए–नए दांव पेचों का हाज़िरजवाबी से मुकाबला करना नहीं सीखा है, और वह मुकद्दमा हार जाता है। शेयर बाज़ार का एक नया दलाल अगर अभ्यास नहीं करता तो वह मिंटों में बहुत बड़ी धन राशि से हाथ धो बैठता है। जिस अनाड़ी सेल्ज़मैन ने अभ्यास नहीं किया, वह बिक्री न होने के कारण भूखा मर सकता है। इन समस्याओं का सही उत्तर अभ्यास, अभ्यास और अभ्यास है।

मनुष्य कभी–कभी महसूस करता है कि जो कुछ उसने सीखा है, उसे प्रयोग में नहीं लाया जा सकता। ऐसी स्थिति में कसूर गलत ढंग से किए गए अध्ययन का, अध्यापक का या पाठ्य पुस्तक का होता है। निर्देशों को पढ़ना एक बात है, और उन्हें प्रयोग में लाना कभी–कभी बिल्कुल दूसरी बात होती है।

यदि अभ्यास करने के बाद भी कोई परिणाम नहीं निकलता, तो कभी–कभी पुस्तकों को फैंकना पड़ता है, और नए सिरे से शुरू करना पड़ता है। फिल्मों की साऊंडरिकार्डिंग का क्षेत्र कुछ इसी प्रकार का है। यदि इस क्षेत्र की उपलब्ध पुस्तकों के अनुसार रिकार्डिंग की जाती है, तो पंछी के गीत की रिकार्डिंग भौंपू की ध्वनि से ज्यादा अच्छी नहीं होगी। यही कारण है कि कुछ फिल्मों में अभिनेता का वार्तालाप आपके पल्ले नहीं पड़ता। जिन लोगों ने अच्छी साऊंडरिकार्डिंग की है उन्हें इसके तरीके स्वयं ढूंढने पड़े। परन्तु फिल्मों के इसी क्षेत्र में इससे बिल्कुल विपरीत स्थिति भी होता है। फिल्मों में रोशनी के प्रयोग के विषय में कई अत्युत्तम पुस्तकें उपलब्ध हैं। यदि इनका अनुसरण किया

जाता है, तो एक सुन्दर दृश्य की रचना की जा सकती है।

विशेषकर तेज रफ्तार तकनॉलोजी वाले समाज में यह दुःख की बात है कि सभी गतिविधियों के लिए सरलता से समझ आने वाली पर्याप्त पुस्तकें उपलब्ध नहीं है। परन्तु यह किसी के लिए रूकावट नहीं बननी चाहिए। जब अच्छी पुस्तकें उपलब्ध हों, तो उनकी कदर करो और उनका भली प्रकार अध्ययन करो। यदि अच्छी पुस्तकें नहीं मिलतीं, तो उपलब्ध तथ्यों को एकत्रित करो, उनका अध्ययन करो, शेष तथ्यों की स्वयं खोज करो।

परन्तु ज्ञान को और तथ्यों को फल केवल तभी लगते हैं जब इन्हें प्रयोग में लाया जाता है, और अभ्यास के साथ प्रयोग में लाया जाता है।

यदि मनुष्य के आसपास लोग इतना अभ्यास नहीं करते कि वे अपने कार्यो को सच्चे अर्थो में कर सकें, तो मनुष्य के लिए खतरा पैदा हो जाता है। कार्य को ''ठीक-ठीक'' करने में और पेशेवर निपुणता एवं दक्षता में विशाल अन्तर है। और यह अन्तर केवल अभ्यास द्वारा ही समाप्त किया जा सकता है।

लोगों से कहो कि वे ध्यान से देखें, अध्ययन करें, और अपने कार्यक्षेत्र में स्वयं खोज करें, और तत्पश्चात इस कार्य को करें। और जब वे इसे ठीक ढंग से करने लगते हैं, तो उनसे कहो कि वे तब तक अभ्यास करें, अभ्यास करें, और अभ्यास करें जब तक वे एक पेशेवर के समान निपुण नहीं हो जाते।

निपुणता, दक्षता तथा तेज़ी से काम करने से बड़ा आनन्द मिलता है। केवल अभ्यास करने से ही इसे सुरक्षित ढंग से किया जा सकता है।

एक तेज़ रफ्तार संसार में सुस्त चाल लोगों के साथ रहना हमारे जीवन को ज्यादा सुरक्षित नहीं बनाता।

सुख की राह पर सब से उत्तम यात्रा कार्यकुशल सहयात्रियों के साथ होती है।

18. दूसरों की धार्मिक आस्थाओं का सम्मान करो।

सहनशीलता मानवीय रिश्तों की इमारत के लिए बढ़िया नींव का काम करती है।

यदि मनुष्य सम्पूर्ण मानव इतिहास तथा आधुनिक युग में धार्मिक असहनशीलता के कारण होने वाली मार-काट तथा दुःख दर्द पर नज़र डालता है, तो उसे पता चल सकता है कि असहनशीलता जीवन जीने के प्रति एक घातक दुष्कर्म है।

सहनशीलता का अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य अपनी धार्मिक आस्थाओं के विषय में अपने विचारों को व्यक्त नहीं कर सकता। इसका अर्थ यह ज़रूर है कि दूसरों की धार्मिक आस्थाओं तथा विश्वासों को ठेस पहुंचाना या उन पर हमला करना हमेशा मुसीबत मोल लेना होता है।

अति प्राचीन काल से दार्शनिक लोग परमात्मा, मनुष्य और ब्रह्माण्ड के विषय में एक दूसरे से झगड़ते आए हैं। अधिकारी विद्वानों की राय मे उतार-चढ़ाव आते रहे हैं। मिश्र और रोम के प्राचीन समय से चले आ रहे "यंत्रवाद[26] और पदार्थवाद[27]" के दार्शनिक सिद्धान्त आज के

---

26. **यंत्रवाद** : इस विचारधारा के अनुसार जीवन केवल गतिमय पदार्थ है और इसके सभी कार्यों को भौतिक सृष्टि के नियमों की सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है। यह एक प्राचीन सिद्धान्त है, जिसके मानने वाले महसूस करते हैं कि धर्म की ओर से ध्यान हटाना ज़रूरी है क्योंकि धर्म को गणित की तरह स्पष्ट नहीं किया जा सकता। धर्मो के अनुयाईयों ने उन पर आक्रमण किए और उन्होंने धर्मो पर आक्रमण किए। राबर्ट बोआयल ने भौतिकी के बोआयल नियम को विकसित किया था, और उन्होंने यंत्रवाद का यह कहकर खण्डन किया था कि क्या यह हो सकता है कि प्रकृति की यह योजना हो कि गतिमय पदार्थों का अस्तित्व होना चाहिए।

27. **पदार्थवाद** : तत्वज्ञान के कई सिद्धान्तों में से एक सिद्धान्त, जिसके अनुसार सृष्टि केवल पदार्थों से मिलकर बनी है, जिनका आकार बहुत बड़ा या बहुत छोटा हो सकता है। यह माना जाता है कि मन जैसी चीज़ें भी मौलिक स्तर पर पदार्थ या पदार्थ की गति होते हैं। पदार्थवाद एक बहुत प्राचीन विचारधारा है। दूसरी विचारधाराएं भी हैं।

युग में भी एक फैशन बने हुए हैं। ऐसे सिद्धान्त दावा करते हैं कि सब कुछ पदार्थ है। वे भूल जाते हैं कि विकासवाद[28] संबंधी उनकी युक्तियां चाहे कितनी भी तर्कसंगत हों फिर भी ऐसी युक्तियां इस संभावना को रद्द नहीं करतीं कि यहां कुछ और तत्व भी काम कर सकते हैं जो विकासवाद जैसी प्रक्रियाओं का मात्र प्रयोग कर रहे हैं। आज कल ये ''सरकारी'' दार्शनिक सिद्धान्त बन गए हैं, और इन्हें स्कूलों में भी पढ़ाया जाता है। इन सिद्धान्तों के अपने कट्टरपंथी हैं जो दूसरों की आस्थाओं तथा धर्मों पर हमला करते हैं। इसका परिणाम असहनशीलता और विवाद होता है।

यदि पांचवी शताब्दी ईसवी पूर्व या इससे भी पहले से लेकर अब तक सभी प्रतिभाशाली बुद्धिजीवी धर्म या धर्म-विरोधी विचारों के विषय में कभी एकमत नहीं हो सके, तो झगड़े का यह एक ऐसा क्षेत्र है जिससे दूर रहना मनुष्य के लिए बढ़िया रहेगा।

विवाद के इस समुन्दर में से एक सिद्धान्त उभरता है कि अपने चुने हुए धर्म में विश्वास रखना मनुष्य का अधिकार है।

''विश्वास'' और ''आस्था'' के लिए तर्क के सामने झुकना ज़रूरी नहीं है और न ही इन्हें तर्कहीन कहा जा सकता है। ये दोनों बिल्कुल अलग प्रकार की चीज़ें हो सकती हैं।

इस विषय में दूसरों को सर्वाधिक सुरक्षित सलाह तभी दी जा सकती है जब यह अपने चुने हुए धर्म पर विश्वास रखने के अधिकार पर बल देती है। मनुष्य दूसरों के सामने अपनी आस्थाओं को रखने के लिए स्वतंत्र है। जब मनुष्य दूसरों की आस्था को चोट पहुंचाता है, तो वह अपने आप को खतरे में डालता है। इससे भी बढ़कर खतरा तब होता है जब वह धार्मिक आस्थाओं के कारण दूसरों पर हमला करता है और उन्हें हानि पहुंचाने का प्रयास करता है।

मानव जाति की उत्पत्ति के समय से मनुष्य अपने धर्मों से बड़ी मात्रा में मानसिक शान्ति तथा आनन्द प्राप्त करता रहा है। यहां तक

---

28. विकासवाद : एक बहुत प्राचीन सिद्धान्त जिसमें यह माना जाता है कि सृष्टि के आरम्भ में एक ही मूल तत्व था जिसमें से सभी वनस्पतियां, वृक्ष, जीवजन्तु तथा मनुष्य निकले, विकसित हुए और बढ़े हैं इनके निर्माण और विकास में केवल माहौल की भूमिका होती है।

कि आज कल के ''यंत्रवादी'' तथा ''पदार्थवादी'' अपने मत का प्रसार करते समय प्राचीन पुजारियों से बहुत मिलते जुलते हैं।

विश्वास रहित मनुष्यों की दशा दयनीय होती है। विश्वास करने के लिए उन्हें कुछ दिया भी जा सकता है। परन्तु जब वे धार्मिक आस्थाएं रखते हों, तो इनका सम्मान करो।

सुख की राह विवादग्रस्त हो सकती है, यदि मनुष्य दूसरों की धार्मिक आस्थाओं का सम्मान नहीं करता।

19. प्रयत्न करो कि दूसरों के साथ ऐसा व्यवहार न हो जो आप अपने लिए पसंद नहीं करते।

जो ''सुनहरी नियम[29]'' के नाम से प्रचलित है, युगों-युगों से बहुत से देशों की बहुत सी जातियों में उसके कई रूप देखने को मिलते हैं। इसके ऊपर लिखे शब्द रूप का सम्बंध हानिकारक कार्यों से है।

केवल एक संत ही दूसरों को नुकसान पहुंचाए बिना पूरा जीवन व्यतीत कर सकता है। परन्तु केवल एक अपराधी ही सोचे-समझे बिना अपने आसपास के लोगों को नुकसान पहुंचाता है।

''दोषी होना'' या ''लज्जित होना'' या ''अन्तरात्मा की आवाज़'' वास्तव में काफी अप्रिय हो सकते हैं, परन्तु इससे बिल्कुल अलग यह भी सच है कि दूसरों को पहुंचाई गई हानि पलट कर व्यक्ति को स्वयं भुगतनी पड़ सकती है।

सभी हानिकारक कार्यों को बदल कर ठीक नहीं किया जा सकता। मनुष्य दूसरों के प्रति ऐसे कार्य कर सकता है जिन्हें नज़रन्दाज़ नहीं किया जा सकता या भुलाया नहीं जा सकता। कत्ल एक ऐसा ही कार्य है। आप स्वयं निष्कर्ष निकाल सकते हो कि कैसे इस पुस्तक के लगभग हर नीतिवचन का घोर उल्लघंन दूसरे के प्रति ऐसा हानिकारक कार्य बन सकता है जिसे बदल कर ठीक नहीं किया जा सकता।

किसी दूसरे के जीवन को तबाह करने से मनुष्य का अपना जीवन तबाह हो सकता है। समाज में प्रतिक्रिया होती है। जेल और पागलखाने

---

29. सुनहरी नियम : यह बहुत सी जातियों और भिन्न भिन्न लोगों में पाया जाता है और हज़ारों सालों से मानव इसे नैतिक आचरण के लिए एक मानक नियम मानता आया है। इस पुस्तक में सुनहरी नियम के नए शाब्दिक रूप को प्रयोग में लाया गया है, क्योंकि ऐसा समझा गया है कि इसका पुराना रूपान्तर इतना ज्यादा आदर्शवादी था कि इसे व्यवहार में नहीं लाया जा सकता था। इस रूपान्तर को व्यवहार में लाना सम्भव है।

ऐसे लोगों से भरे पड़े हैं जिन्होंने अपने संगी साथियों को नुकसान पहुंचाया है। परन्तु इसके अतिरिक्त और सजाएं भी हैं। चाहे मनुष्य पकड़ा जाता है या नहीं, दूसरों के विरूद्ध किए गए हानिकारक कार्य स्वयं के प्रति एवं दूसरों के प्रति मनुष्य के व्यवहार में कठोर बदलाव पैदा कर सकते हैं, विशेषकर जब हानिकारक कार्यों को छुपाया जाता है। जीवन की खुशियां और आनन्द गायब हो जाते हैं।

''सुनहरी नियम'' का यह रूपान्तर कसौटी के तौर पर भी लाभदायक है। जब आप किसी दूसरे को इस नियम पर चलने के लिए प्रेरित करते हो तो दूसरा इस वास्तविकता पर पहुंच सकता है कि हानिकारक कार्य <u>कौन से</u> हैं? यह आपके इस प्रश्न का उत्तर भी है कि <u>हानि</u> की परिभाषा क्या है? <u>गलत कामों</u> के विषय में दार्शनिक प्रश्न ''गलत क्या है?'' के बारे में तर्क-वितर्क का उत्तर एकदम व्यक्तिगत आधार पर मिल जाता है। क्या आप अपने साथ ऐसा घटित होना पसंद करोगे? यदि उत्तर ''न'' में है, तो यह अवश्य ही कोई हानिकारक कार्य है, और समाज की दृष्टि में गलत काम है। यह सामाजिक चेतना को जागृत कर सकता है। यह मनुष्य को इस निष्कर्ष पर पहुंचाने में सहायक होता है कि किस काम को करना चाहिए और किस काम को नहीं करना चाहिए।

ऐसे समय में जब कुछ लोग हानिकारक कार्य करने में कोई हिचकिचाहट महसूस नहीं करते, मनुष्य की जीवन जीने की क्षमता बहुत निचले स्तर पर पहुंच जाती है।

यदि आप दूसरों को इसका पालन करने के लिए प्रेरित कर सकते हो, तो आप उन्हें एक ऐसा नीतिवचन प्रदान कर दोगे, जिसकी सहायता से वे अपने जीवन का मूल्यांकन कर सकते हैं, तथा कुछ के लिए आप मानव जाति में पुनः प्रवेश के द्वार खोल दोगे।

सुख की राह उनके लिए बन्द है जो अपने आपको हानिकारक कार्य करने से रोक नहीं सकते।

20. प्रयत्न करो कि दूसरों के साथ ऐसा बरताव हो जैसा आप उनसे अपने लिए चाहते हो।

यह ''सुनहरी नियम'' का सकारात्मक रूप है।

यदि कोई मनुष्य ''अच्छा बनो'' सुन कर बुरा मनाता है, तो आपको हैरान नहीं होना चाहिए। हो सकता है उसकी नाराज़गी ''अच्छा बनो'' के विचार से कोई सम्बंध नहीं रखती। शायद इसका कारण यह हो कि उस मनुष्य को इसके सही अर्थों का ज्ञान ही नहीं है।

''अच्छा व्यवहार'' किसे कहते हैं इस विषय में मनुष्य कई उलझनों तथा परस्पर विरोधी विचारों में फंस सकता है। भले ही एक मनुष्य के अध्यापक को इस विषय में ज्ञान था, परन्तु शायद उस मनुष्य को स्वयं इस विषय में कभी कुछ पता नहीं था कि उसे ''आचरण'' के लिए किस प्रकार नम्बर दिए गए थे। यह भी हो सकता है कि किसी को इसके बारे में गलत तथ्य दिए गए थे या किसी ने गलत धारणा बना ली थी जैसे ''बच्चे सामने आ सकते हैं पर उन्हें चुप रहना चाहिए'' ''अच्छे बच्चे आराम से बैठे रहते हैं।''

जो भी हो अच्छे व्यवहार को स्पष्ट करने का एक ऐसा तरीका भी है जिस से व्यक्ति की पूरी तसल्ली हो सकती है।

सभी देशों में हमेशा से मनुष्य जाति ने कुछ विशेषताओं को महत्व दिया है और उनका सत्कार किया है। इन्हें सद्‌गुण[30] कहा जाता है। ऐसे गुणों को समझदार लोगों, महात्माओं, संतों तथा देवताओं की विशेषता बताया गया है। इन्हीं गुणों की सहायता से पता चलता है कि एक बर्बर व्यक्ति तथा एक शालीन व्यक्ति में क्या अन्तर है, और अराजकता में तथा सभ्य समाज में क्या अन्तर है?

''अच्छाई क्या है?'' जानने के लिए एक ईश्वरीय फरमान या दार्शनिकों के मोटे ग्रन्थों की थका देने वाली खोज की ज़रूरत नहीं है।

---

30. सद्‌गुण : मनुष्य के अच्छे आचरण में पाए जाने वाले आदर्श गुण।

इस विषय में व्यक्तिगत स्तर पर रहस्योद्घाटन हो सकता है।

लगभग हर व्यक्ति सोच-विचार द्वारा इसके विषय में पता कर सकता है।

यदि मनुष्य यह सोचे कि वह दूसरों द्वारा किए गए किस प्रकार के बरताव को पसंद करेगा, तो वह मानवीय सद्गुणों का पता कर लेगा। ज़रा सोचो कि आप लोगों से किस प्रकार का व्यवहार चाहते हो।

सम्भवतः सबसे पहले आप यह चाहोगे कि आपके साथ न्यायपूर्ण व्यवहार हो। आप नहीं चाहोगे कि लोग आपके विषय में मिथ्या बातें फैलाएं और आपकी झूठी तथा कठोर निन्दा करें। ठीक है न?

शायद आप चाहोगे कि आपके मित्र तथा साथी आपके प्रति वफादार हों। आप नहीं चाहोगे कि वे आपके साथ विश्वासघात करें।

आपकी यह भी इच्छा हो सकती है कि आपके साथ अच्छी खिलाड़ी भावना वाला व्यवहार हो, न कि कोई चाल चली जाए या आंखों में धूल झोंकी जाए।

आप चाहोगे कि लोग आपके साथ लेन-देन में साफ हों।

आप चाहोगे कि लोग आपके प्रति ईमानदार हों न कि धोखेबाज़। ठीक है न?

आपकी इच्छा हो सकती है कि लोग आपके साथ दयापूर्ण व्यवहार करें न कि निर्दयता वाला।

सम्भवतः आपकी यह भी इच्छा होगी कि लोग आपके अधिकारों तथा भावनाओं का ध्यान रखें।

यदि आप मंदे हाल हो, तो हो सकता है आप पसंद करो कि लोग करूणापूर्वक व्यवहार करें।

शायद आप यह चाहोगे कि दूसरे आपको फटकारने की बजाए आत्मसंयम का प्रयोग करें।

यदि आपके अन्दर कोई दोष या कमियां है, यदि आप कोई गलती कर बैठे हैं, तो हो सकता है आपकी इच्छा हो कि लोग आपके प्रति सहनशील हों, न कि आलोचना करने वाले।

आपको यह ज़्यादा पसंद होगा कि लोग अपना सारा ध्यान दोष निकालने तथा सज़ा देने में लगाने की बजाए क्षमाशील हों। ठीक है?

शायद आप चाहते हो कि लोग आपके लिए हितकारी हों, न कि कमीने या कंजूस।

शायद आपकी इच्छा हो कि दूसरे आप पर विश्वास करें न कि कदम-कदम पर शक करें।

सम्भव है आप इस बात को ज्यादा पसंद करें कि आपकी इज़्ज़त हो न कि बेइज़्ज़ती।

शायद आप चाहोगे कि दूसरे आपके प्रति नम्र हो और आपके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार करें। ठीक है न?

सम्भव है आप पसंद करो कि लोग आप की सराहना करें।

जब कभी आप लोगों के लिए कुछ करते हो, तो सम्भवतः आप पसंद करोगे कि वे आप का धन्यवाद करें। ठीक है न?

शायद आप पसंद करोगे कि दूसरे आप के साथ मित्रतापूर्ण व्यवहार करें।

कुछ लोगों से सम्भवतः आप प्रेम या स्नेह चाहते हो।

सबसे बड़ी बात यह है कि आप नहीं चाहते कि ये लोग इन बातों का मात्र दिखावा करें। आप चाहते हो कि उनका व्यवहार वास्तविक हो और अपने कार्य शुद्ध अन्तरात्मा से करें।

आप सम्भवतः अन्य सद्गुणों के बारे में सोच सकते हो। और इस पुस्तक में दिए गए नीतिवचन भी हैं। इस प्रकार आप संक्षेप में पता लगा लोगे कि सद्गुण किन्हें कहा जाता है।

यह पता करने के लिए कल्पना पर ज्यादा ज़ोर नहीं डालना पड़ता कि अगर आसपास के लोग मनुष्य के साथ लगातार इस प्रकार का व्यवहार करते हैं, तो उसका जीवन आनन्दमय धरातल पर पहुंच जाएगा। इस प्रकार का व्यवहार करने वालों के प्रति निस्संदेह मनुष्य के मन में विशेष वैर भाव उत्पन्न नहीं होगा।

मानवीय सम्बंधों में एक रोचक तथ्य क्रियाशील है। जब कोई व्यक्ति दूसरे पर चिल्लाता है, तो दूसरे में भी इसके जबाब में चिल्लाने की इच्छा पैदा हो जाती है। एक व्यक्ति के साथ काफी हद तक वैसा ही व्यवहार होता है जैसा वह दूसरों के साथ करता है। अपने साथ होने वाले व्यवहार का उदाहरण मनुष्य स्वयं प्रस्तुत करता है। 'क' व्यक्ति 'ख' व्यक्ति के साथ कमीना है, इसलिए 'ख' व्यक्ति 'क' के साथ

कमीना हो जाता है, ‘क’ व्यक्ति ‘ख’ के साथ मैत्रीपूर्ण व्यवहार करता है, इसलिए ‘ख’ व्यक्ति ‘क’ के प्रति मैत्रीपूर्ण बन जाता है। मुझे विश्वास है कि आप ने इस तथ्य को निरन्तर क्रियाशील होते देखा होगा। सोहन सभी औरतों को नफ़रत करता है, इसलिए औरतों में भी सोहन को नफ़रत करने की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है। अहमद हर एक के साथ सख्ती से पेश आता है, इसलिए दूसरों में भी अहमद के प्रति सख्ती से पेश आने की प्रवृत्ति पैदा हो जाती है। और यदि वे खुलकर ऐसा करने का हौसला नहीं करते, तो वे अहमद के प्रति कठोरता से पेश आने वाली भावना दिल ही दिल में छिपा कर रख सकते हैं ताकि जब भी अवसर मिले, वे ऐसा कर सकें।

आप देख सकते हो कि फिल्मों की अवास्तविक दुनियां में खलनायक तो अत्यन्त कार्यकुशल गिरोह से जुड़ा एक भद्र पुरूष होता है और नायक अत्यंत गंवार और अकेला होता है। जीवन वास्तव में इस प्रकार नहीं है। असली खलनायक साधारणतया बहुत उजड्ड होते हैं और उनके पिछलग्गू उनसे भी ज्यादा उजड्ड। नेपोलियन और हिटलर के अपने साथियों ने कदम कदम पर विश्वासघात किया था। वास्तविक दुनियां के नायकों का बोलने का ढंग सर्वाधिक शान्त होता है और वे अपने मित्रों के प्रति बहुत नम्र होते हैं।

जब आपको अपने व्यवसाय की चोटी पर पहुंचने वाले पुरूषों तथा स्त्रियों से मिलने और बातचीत करने का सौभाग्य प्राप्त होता है तो आप आश्चर्यचकित हो जाते हो कि उनका व्यवहार आपके सम्पर्क में आने वाले व्यक्तियों में सबसे अच्छा था।

जिन कारणों वश वे चोटी पर पहुंचे हैं उनमें से एक यह है कि ऐसे अधिकांश लोग दूसरों के साथ अच्छा व्यवहार करने का प्रयत्न करते हैं। और इसके जवाब में आसपास के लोग भी उनके साथ अच्छा बरताव करना चाहते हैं, और यहां तक कि उनकी कुछ कमियों को भी क्षमा कर देते हैं।

बात ठीक है कि मानवीय सद्‌गुणों का निर्णय मनुष्य स्वयं कर सकता है यदि वह पता लगा ले कि वह अपने साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाना पसंद करेगा।

मेरी राय में ऐसा करने वाले मनुष्य ने ''अच्छा आचरण वास्तव में क्या है?'' के विषय में हर गुत्थी को सुलझा लिया है। अच्छा आचरण निकम्मे रहने और हाथ पर हाथ रखकर चुपचाप बैठे रहने से कोसों दूर है। ''अच्छा बनना'' एक बहुत क्रियात्मक एवं ज़ोरदार गतिविधि हो सकती है।

उदासी या अत्याधिक गंभीरता में खुशी न के बराबर होती है। जब कुछ पुराने लोग यह एहसास करवाते थे कि सद्‌गुणों को अपनाने से जीवन बेअराम एवं नीरस बन जाता है, तो उनका निष्कर्ष यह था कि सारा आनन्द दुराचार में था, जिसका वास्तविकता के साथ दूर का सम्बंध भी नहीं है। खुशी तथा आनन्द अनैतिकता से नहीं मिलते। इस विषय में सच्चाई बिल्कुल विपरीत है। खुशी तथा आनन्द केवल ईमानदार दिलों में उदय होते हैं। अनैतिक लोग दुःख और पीड़ा से भरपूर बेहद दर्दनाक जीवन गुज़ारते हैं। मानवीय सद्‌गुणों का उदासीनता से कोई रिश्ता नहीं है। सद्‌गुण जीवन का उजला मुख होते हैं।

आपके विचार में क्या होगा, यदि मनुष्य अपने आसपास के लोगों से न्याय, वफादारी, उच्च खिलाड़ी भावना, लेन-देन में साफ, ईमानदारी, दया, दूसरे का ध्यान रखना, करुणा, आत्मसंयम, सहनशीलता, क्षमाशीलता, हितकारी भावना, विश्वास, सम्मान, नम्रता, प्रतिष्ठा, श्रद्धा, मित्रता तथा स्नेह के साथ व्यवहार करे और करे भी शुद्ध अन्तरात्मा से पूरी सत्यनिष्ठा के साथ?

शायद इसमें कुछ देर लग जाए, परन्तु क्या आप ऐसा नहीं सोचते कि बहुत सारे दूसरे लोग ऐसा ही व्यवहार करने की चेष्टा करेगें?

कभी-कभार मनुष्य से गलती हो सकती है, जैसे जब कोई चौंका देने वाली खबर मनुष्य के दिमाग को चकरा दे, या किसी चोर के सिर पर लाठी मारनी पड़ जाए, या काम पर पहुंचने में मनुष्य को देरी होने पर कोई खरदिमाग ड्राईवर तेज़ गति वाली लाईन में अपने वाहन को धीरे-धीरे चला रहा हो। चाहे ऐसे अवसर कभी-कभी आ भी जाएं, फिर भी यह काफी स्पष्ट हो जाना चाहिए कि मनुष्य अपने आप को मानवीय रिश्तों के नए धरातल पर पहुंचा देगा। मनुष्य की जीवन जीने की क्षमता काफी बढ़ जाएगी। और उसका जीवन निश्चित रूप से अधिक

सुखमय बन जाएगा।

मनुष्य अपने आसपास के लोगों के आचरण को प्रभावित कर सकता है। यदि मनुष्य पहले ही ऐसा नहीं कर रहा, तो हर रोज़ एक गुण को लेकर, और उस दिन उस गुण में दक्ष बन कर इसे और भी सुगम बनाया जा सकता है। इस प्रकार करते रहने से अन्त में सभी सद्‌गुण उसके व्यक्तित्व में समा जाएंगे।

निजी लाभ के अतिरिक्त मनुष्य मानवीय रिश्तों के एक नए युग को आरम्भ करने में अपना हाथ बंटा सकता है, चाहे इसकी मात्रा कितनी भी कम क्यों न हो।

तालाब में फैंका गया एक छोटा सा पत्थर ऐसी लहरें पैदा कर सकता है जो परले किनारे तक पहुंच जाती हैं।

सुख की राह को और अधिक उज्जवल बनाया जा सकता है यदि इस नीतिवचन का पालन किया जाता है : ''प्रयत्न करो कि दूसरों के साथ ऐसा बरताव हो जो आप उनसे अपने लिए चाहते हो।''

21. फलो-फूलो[31] और खुशहाल[32] बनो।

कभी-कभी दूसरे लोग मनुष्य को कुचलने का प्रयास करते हैं, ताकि उसकी आशाओं को, उसके सपनों को, उसके भविष्य को, और स्वयं मनुष्य को मिट्टी में मिलाया जा सके।

हंसी उड़ा कर तथा दूसरे साधनों द्वारा दुष्ट प्रवृत्ति वाले लोग मनुष्य को नीचे गिराने का प्रयास कर सकते हैं।

चाहे इसका कारण कुछ भी हो, परन्तु जब मनुष्य अपने आपको उन्नत करने तथा सुखी बनाने का प्रयास करता है, तो वह दूसरों के हमले का निशाना बन सकता है।

कभी-कभी यह ज़रूरी हो जाता है कि इन हमलों के साथ सीधे तौर से निबटा जाए, परन्तु इनसे निबटने का एक दीर्घकालीन तरीका भी है, जो कभी असफल नहीं होता।

ऐसे लोग मनुष्य के साथ वास्तव में क्या करने का प्रयास कर रहे हैं? वे मनुष्य को गिराने का प्रयास कर रहे हैं। उनकी धारणा के अनुसार मनुष्य किसी न किसी कारणवश उनके लिए खतरनाक है। यदि मनुष्य दुनियां में ऊपर उठ जाता है, तो वह उनके लिए मुसीबत खड़ी कर देगा। इसलिए ऐसे लोग दूसरों की प्रतिभा एवं योग्यता को दबाने के लिए कई तरीकों का प्रयोग करते हैं।

कुछ सिरफिरे इस प्रकार की योजना भी बनाते हैं। यदि ''क'' अधिक सफल हो जाता है, तो वह मेरे लिए मुसीबत खड़ी कर सकता है। इसलिए मुझे 'क' की सफलता में रूकावट डालने के लिए भरसक प्रयत्न करना चाहिए। ऐसे लोगों को यह एहसास कभी नहीं होता कि उनके ऐसे कार्य 'क' को उनका दुश्मन बना सकते हैं, चाहे पहले 'क' उनका दुश्मन न भी हो। इन सिरफिरे व्यक्तियों के ऐसे कार्यों को इनके लिए मुसीबत में डालने वाला सीधा रास्ता कहा जा सकता है। कुछ लोग

---

31. फलो-फूलो : निरन्तर उन्नति करना, अधिक से अधिक समृद्ध बनना।
32. खुशहाल : सब प्रकार से सम्पन्न और सुखी, सुसम्पन्न।

ऐसे कार्य इसलिए करते हैं क्योंकि उनके दिल में किसी के लिए अकारण बुरी भावना होती है या क्योंकि वे ''किसी को पसंद नहीं करते।''

चाहे ये कार्य किसी भी प्रकार किए जाएं, ऐसे लोगों का असली इरादा यह होता है कि उनके निशाने को आगे बढ़ने से रोका जाए तथा उसे जीवन में असफल बनाया जाए।

ऐसी स्थिति और इन लोगों से निपटने का तथा इन्हें हराने का असली तरीका यह है कि फलो-फूलो और खुशहाल बनो।

यह बिल्कुल सच है कि ऐसे लोग मनुष्य को अपना जीवन बेहतर बनाता देख कर बौखला सकते हैं तथा अधिक ज़ोर से हमला कर सकते हैं। यदि बहुत ज़रूरी है तो आप उनसे निपट सकते हो, परन्तु फलना फूलना और खुशहाल बनना कभी न भूलो, क्योंकि यही तो वे लोग आपसे चाहते हैं।

यदि आप ज्यादा से ज्यादा फलते-फूलते और खुशहाल बनते हो तो ऐसे लोग इस विषय में उदासीन हो जाते हैं। वे ऐसी हरकतों को पूरी तरह त्याग भी सकते हैं।

यदि जीवन में मनुष्य के उद्देश्य सार्थक हैं, यदि मनुष्य इस पुस्तक में दिए गए नियमों को ध्यान में रखते हुए उन उद्देश्यों को पूरा करता है, यदि वह फलता फूलता है और खुशहाल बनता है, तो यह निश्चित है कि वह अन्त में विजयी होगा, और आशा की जाती है कि ऐसे लोगों का एक बाल भी बांका नहीं करना पड़ेगा।

और यही आपके लिए मेरी कामना है :
फलो फूलो और खुशहाल बनो।

उपसंहार[33]

सार्थक गतिविधियों में लगे रहने से ही खुशी मिलती है। परन्तु ऐसा एक ही मनुष्य है जो निश्चित रूप से कह सकता है कि किस गतिविधि से खुशी मिलेगी और वह है आप स्वयं।

इस पुस्तक में दिए गए नीतिवचन वास्तव में सड़क के दो किनारों जैसे हैं। इनकी उल्लंघना करने वाला उस कार चालक के समान है जो सड़क के किनारे से उतर जाता है, जिसका परिणाम उस पल की, किसी रिश्ते की, या जीवन की तबाही हो सकता है।

केवल आप ही कह सकते हो कि सड़क किस ओर जा रही है, क्योंकि मनुष्य स्वयं एक विशेष समय के लिए एक विशेष रिश्ते के लिए, जीवन के विशेष दौर के लिए अपनी मंज़िल को निर्धारित करता है।

कभी-कभी मनुष्य महसूस कर सकता है कि वह एक गंदी गली में ठोकरें खाने वाले पत्ते के समान है या वह एक स्थान में फंसे रेत के एक कण के समान है। परन्तु यह किसने कहा है कि जीवन एक शान्त एवं सुलझी हुई चीज़ है? यह ऐसी चीज़ नहीं है। मनुष्य स्वयं न तो झुरमुर हुआ एक पत्ता है और न ही रेत का एक कण। मनुष्य थोड़ी या बहुत मात्रा में अपने पथ का नक्शा बनाकर उस पर चल सकता है।

मनुष्य यह सोच सकता है कि परिस्थितियां ऐसी बन चुकी हैं कि कुछ भी करने के लिए अब बहुत देर हो चुकी है, कि उसके अतीत की सड़क में इतनी ज्यादा गड़बड़ हो चुकी है कि भविष्य के लिए ऐसी सड़क का नक्शा बनाने का कोई अवसर बाकी नहीं बचा, जो पहली सड़क से भिन्न होगी। परन्तु सड़क पर हमेशा एक स्थान होता है जहां से मनुष्य नई राह का नक्शा बना सकता है, और इस पर चलने का प्रयास कर सकता है। ऐसा कोई भी मनुष्य जीवित नहीं है, जो एक नई शुरूआत नहीं कर सकता।

विरोध की किसी संभावना के बिना यह कहा जा सकता है कि अन्य लोग हंसी उड़ा कर तथा दूसरे कई साधनों से मनुष्य को सड़क

---

33. उपसंहार : किसी पुस्तक के अन्त में वह अध्याय जिसमें पुस्तक का सारांश या परिणाम संक्षेप में बताया गया हो।

के किनारे से धकेल सकते हैं, अनैतिक जीवन जीने के लिए मनुष्य को कई तरीकों से फुसला सकते हैं। ये लोग अपना उल्लू सीधा करने के लिए ऐसे कार्य करते हैं, तथा यदि मनुष्य इनकी बातों की ओर ध्यान देता है तो अन्ततः उसे दुःख और मुसीबत का सामना करना पड़ता है।

इस पुस्तक के नीतिवचनों का पालन करते समय तथा दूसरों द्वारा इसका पालन करवाते समय निस्संदेह मनुष्य को कभी-कभी असफलता मिल सकती है। मनुष्य को चाहिए कि वह इनसे कुछ सीखे तथा डटा रहे। कौन कहता है सड़क पर ऊंचे-नीचे स्थान नहीं होते। फिर भी इस पर यात्रा की जा सकती है। अगर लोग चलते-चलते गिर भी जाते हैं, तो इसका अर्थ यह नहीं है कि वे उठकर दोबारा चल नहीं सकते।

यदि मनुष्य सड़क के किनारों का ध्यान रखता है तो वह बहुत बड़ी गलती नहीं कर सकता। सच्चा उल्लास, आनन्द और खुशी अन्य चीज़ों से मिलते हैं, टूटी हुई ज़िन्दगियों से नहीं।

यदि आप दूसरों को इस राह पर चलने के लिए प्रेरित कर सकते हो, तो आप को पर्याप्त खाली समय मिल जाएगा, जिसमें आपको यह खोजने का अवसर मिलेगा कि सच्चा आनन्द क्या है?

सुख की राह उन लोगों के लिए एक तेज़ रफ़्तार सड़क है जो इसके किनारों का ध्यान रखते हैं।

आप चालक हैं ।

आपकी जीवनयात्रा सुखमय हो !

1981, 2004 एल. रॉन हब्बर्ड लाइब्रेरी सर्वाधिकार सुरक्षित प्रत्येक अनाधिकृत अनुवाद, डुप्लीकेशन आयात या वितरण, पूरी तरह से या आंशिक रूप से, जिसमें इलैक्ट्रानिक अनुलिपि तथा संग्रहण या संचरण शामिल हैं, अनुपालनीय कानूनों का उल्लंघन है। The Way of Happiness, तथा सुख की राह, तथा "Road and Sun" design trademark हैं जिनके स्वामी यू.एस.ए. और दूसरे देशों में, एल. रॉन हब्बर्ड लाइब्रेरी है (Trademark की रजिस्ट्रेशन मंजूर हो चुकी है और दूसरी रजिस्ट्रेशन विचार अधीन हैं) और ये इनकी अनुमति से प्रयोग किए जा रहे हैं।

इस पुस्तक की और अधिक प्रतियां
नीचे लिखे पते पर उपलब्ध हैं।

The Way to Happiness Foundation International
201 E. Broadway, Glendale, CA 91205 USA
800-255-7906 or 818-254-0600
Fax: 818-254-0555
Email: info@twth.org
Website: www.thewaytohappiness.org

सामान्य सूझ बूझ पर पूरी तरह आधारित यह पहला धर्म निरपेक्ष नैतिक कोड है एल. रॉन हब्बर्ड ने इसे व्यक्तिगत पुस्तक के रूप में लिखा था। इस का किसी धार्मिक सिद्धान्त से कोई रिश्ता नहीं है। इसके मुद्रण या वितरण का यह मतलब नहीं है कि ऐसा करने वाला किसी धार्मिक संस्था से जुड़ा है, या उसे किसी धार्मिक संस्था का समर्थन प्राप्त है। इसलिए सरकारी विभाग और कर्मचारी एक धर्म निरपेक्ष गतिविधि के रूप में इस का वितरण कर सकते हैं। (इस पुस्तक के मुद्रण की अनुमति प्राप्त करने के लिए प्रकाशन अधिकारों के स्वामी या उनके प्रतिनिधि से सम्पर्क करें) Hindi Edition